धम्म वंदना

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धम्म-वंदना

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

छटां संशोधित संस्करण : सितंबर २००६
पुनर्मुद्रण : २०११, २०१२

मूल्यः रु. ४५/-

ISBN 978-81-7414-286-X

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६, २४३७१२,
२४३२३८; फैक्स: ९१-२५५३-२४४१७६
Email: vri_admin@dhamma.net.in
info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

१. रतनत्तय २
२. सरण-गमन ४
३. वन्दना ६
४. तिसरण-सीलानं याचना १०
५. पञ्चसील-समादान १२
६. अट्ठङ्ग-उपोसथ-सीलानं याचना १४
७. अट्ठसील-समादान १६
८. देव-आह्वानसुत्त १८
९. उग्घोसन-गाथा २०
१०. उदान-गाथा २२
११. पटिच्चसमुप्पाद २४
१२. पट्ठानपच्चयुद्देस २६
१३. जयमङ्गल-अट्ठगाथा २८
१४. मङ्गलसुत्त ३२
१५. रतनसुत्त ३६
१६. करणीयमेत्त-सुत्त ४४
१७. मेत्ता-भावना ४८
१८. मित्तानिसंससुत्त ५२
१९. पराभवसुत्त ५६
२०. आटानाटियसुत्त ६२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१. बोज्झङ्गसुत्त ६८
२२. नरसीह-गाथा ७२
२३. पुब्बण्हसुत्त ७६
२४. मङ्गल-कामना ८२
२५. मङ्गल-आसिंसना ८६
२६. पुञ्ञानुमोदन ८६
२७. धम्म-संवेग ८८
२८. पकिण्णक ९०
२९. खन्धपरित्त ९४
विपश्यना सहित्य
विपश्यना साधना केंद्र.

संकेत-सूची

अ० नि० = अङ्गुत्तरनिकाय
अट्ठ० = अट्ठकथा
अप० = अपदान
उदा० = उदान
खु० पा० = खुद्दकपाठ
जा० = जातक
दी० नि० = दीघनिकाय
ध० प० = धम्मपद
पट्ठा० = पट्ठान
महाव० = महावग्ग
विसुद्धि० = विसुद्धिमग्ग
सं० नि० = संयुत्तनिकाय
सारत्थ० टी० = सारत्थदीपनी-टीका
सु० नि० = सुत्तनिपात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

धम्म-वंदना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१. रतनत्तय

बुद्धो

इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिस-दम्म-सारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति।

– दी. नि. १.४४, सामञ्ञफलसुत्तं

धम्मो

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति।

– दी. नि. २.७३, महापरिनिब्बानसुत्तं

सङ्घो

सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसङ्घो, आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो अञ्जलिकरणीयो अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।

– दी. नि. २.७३, महापरिनिब्बानसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१. त्रिरत्न

बुद्ध

ऐसे ही तो हैं वे भगवान! अरहंत, सम्यक-सम्बुद्ध, विद्या तथा सदाचरण से सम्पन्न, उत्तम गति प्राप्त, समस्त लोकों के ज्ञाता, सर्वश्रेष्ठ, (पथ-भ्रष्ट घोड़ों की तरह) भटके लोगों को सही मार्ग पर ले आने वाले सारथी, देवताओं और मनुष्यों के शास्ता (आचार्य), बुद्ध, भगवान।

धर्म

भगवान द्वारा भली प्रकार आख्यात किया गया यह धर्म, संदृष्टिक है काल्पनिक नहीं, प्रत्यक्ष है, तत्काल फलदायक है, आओ और देखो (कहलाने योग्य है), निर्वाण तक ले जाने योग्य है, प्रत्येक समझदार व्यक्ति के साक्षात करने योग्य है।

संघ

सुमार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, ऋजु मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, न्याय (सत्य) मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, उचित मार्ग पर चलने वाला है भगवान का श्रावक संघ, यह जो (मार्ग-फल प्राप्त आर्य) व्यक्तियों के चार जोड़े हैं याने आठ पुरुष-पुद्गल हैं– यही भगवान का श्रावक संघ है, (यही) आवाहन करने योग्य है, पाहुना बनाने (आतिथ्य) योग्य है, दक्षिणा देने योग्य है, अंजलि-बद्ध (प्रणाम) किये जाने योग्य है। लोगों का यही श्रेष्ठतम पुण्य क्षेत्र है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२. सरण-गमन

बुद्धं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि।
धम्मं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि।
सङ्घं जीवितपरियन्तं सरणं गच्छामि ॥१॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं,
बुद्धो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन,
जयस्सु जयमङ्गलं ॥२॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं,
धम्मो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन,
भवतु ते जयमङ्गलं ॥३॥

नत्थि मे सरणं अञ्ञं,
सङ्घो मे सरणं वरं।
एतेन सच्चवज्जेन,
भवतु सब्ब-मङ्गलं ॥४॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२. शरण-गमन

मैं जीवन-पर्यंत बुद्ध की शरण जाता हूं।
मैं जीवन-पर्यंत धर्म की शरण जाता हूं।
मैं जीवन-पर्यंत सङ्घ की शरण जाता हूं॥१॥

मेरी अन्य कोई शरण नहीं,
केवल बुद्ध ही मेरी उत्तम शरण हैं,
इस सत्य वचन (के प्रताप) से
जय हो! मंगल हो!!२॥

मेरी अन्य कोई शरण नहीं,
केवल (लोकोत्तर) धर्म ही मेरी उत्तम शरण है,
इस सत्य वचन (के प्रताप) से
तेरा जय-मंगल हो!!३॥

मेरी अन्य कोई शरण नहीं,
केवल (आर्य) संघ ही मेरी उत्तम शरण है,
इस सत्य वचन (के प्रताप) से
सब का मंगल हो!!४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३. वन्दना

ये च बुद्धा अतीता च,
ये च बुद्धा अनागता। (सं. नि. १.१.१६६, गारवसुत्तं)
पच्चुप्पन्ना च ये बुद्धा,
अहं वन्दामि सब्बदा॥१॥

ये च धम्मा अतीता च,
ये च धम्मा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये धम्मा,
अहं वन्दामि सब्बदा॥२॥

ये च सङ्घा अतीता च,
ये च सङ्घा अनागता।
पच्चुप्पन्ना च ये सङ्घा,
अहं वन्दामि सब्बदा॥३॥

यो सन्निसिन्नो वरं बोधिमूले,
मारं ससेनं महतिं विजेत्वा।
सम्बोधिमधिगच्छि अनन्तञाणो,
लोकोत्तमो तं पणमामि बुद्धं॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३. वंदना

अतीत काल में जितने भी बुद्ध हुए हैं,
अनागत काल में जितने भी बुद्ध होंगे,
वर्तमान काल में जितने भी बुद्ध हैं,
उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं॥१॥

अतीत काल के जो भी धर्म हैं,
अनागत काल में जो भी धर्म होंगे,
वर्तमान काल के जो भी धर्म हैं,
उन सबों की मैं सदैव वंदना करता हूं॥२॥

अतीत काल में जो भी आर्य-संघ हुए हैं,
अनागत काल में जो भी आर्य-संघ होंगे,
वर्तमान काल में जो भी आर्य-संघ हैं,
उन सबों की मैं सदैव वदना करता हूं॥३॥

जिन्होंने श्रेष्ठ बोधिवृक्ष के नीचे (ध्यानस्थ) बैठ कर,
महती सेना सहित मार को पराजित कर सम्बोधि प्राप्त की,
उन अनंतज्ञानी सर्व लोकों में श्रेष्ठ (भगवान) बुद्ध को
मैं प्रणाम करता हूं॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अट्ठङ्गिको अरियपथो जनानं,
मोक्खप्पवेसो उजुकोव मग्गो।
धम्मो अयं सन्तिकरो पणीतो,
निय्यानिको तं पणमामि धम्मं ॥५॥

सङ्घो विसुद्धो वरदक्खिणेय्यो,
सन्तिन्द्रियो सब्बमलप्पहीनो।
गुणेहि-नेकेहि समिद्धिपत्तो,
अनासवो तं पणमामि सङ्घं ॥६॥

– श्रामणेर-विनय

आरद्धविरिये पहितत्ते,
निच्चं दळ्ह-परक्कमे।
समग्गे सावके पस्स,
एतं बुद्धानवन्दनं ॥७॥

– सं. नि. अट्ठ. २.२.४५, दसबलसुत्तवण्णना

इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया धम्मं पूजेमि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया सङ्घं पूजेमि ॥८॥

अद्धा इमाय पटिपत्तिया
जाति-जरा-मरण्हा
परिमुच्चिस्सामि ॥९॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जो लोगों के उपयुक्त आर्य अष्टांगिक मार्ग है, जो कि
मोक्ष प्राप्ति के लिए सीधा सरल मार्ग है, यह जो
शांतिदायक, उत्तम धर्म है और यह जो निर्वाण की ओर
ले जाने वाला है, ऐसे सद्धर्म को मैं प्रणाम करता हूं॥५॥

यह जो विशुद्ध, श्रेष्ठ, दक्षिणा देने योग्य, शांत-इंद्रिय,
समस्त मलों से विमुक्त, अनेक निष्पाप गुणों से समृद्ध,
आश्रवहीन (भिक्षु) संघ है – ऐसे (आर्य) संघ को मैं
प्रणाम करता हूं॥६॥

संकल्प युक्त प्रयत्नशील (निर्वाण के लिए) नित्य दृढ़
पराक्रम में संलग्न (इन) एकत्रीभूत श्रावकों को देखो। यही
बुद्धों की वंदना है॥७॥

सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं बुद्ध की पूजा करता हूं।
सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं धर्म की पूजा करता हूं।
सद्धर्म के इस मार्ग पर आरूढ़ होकर मैं संघ की पूजा करता हूं॥८॥

इस मार्ग पर आरूढ़ होकर
मैं निश्चय ही जन्म, जरा और
मृत्यु से मुक्त हो जाऊंगा॥९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४. तिसरण-सीलानं याचना

सिस्सो – ओकास, अहं भन्ते! तिसरणेन सह पञ्चसीलं धम्मं
याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे, भन्ते!
दुतियम्पि, अहं भन्ते! तिसरणेन सह पञ्चसीलं धम्मं
याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे, भन्ते!!
ततियम्पि, अहं भन्ते! तिसरणेन सह पञ्चसीलं धम्मं
याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे, भन्ते!!!

आचरियो – यमहं वदामि तं वदेहि।

सिस्सो – आम, भन्ते!

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

बुद्धं सरणं गच्छामि।
धम्मं सरणं गच्छामि।
सङ्घं सरणं गच्छामि।

दुतियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि।
दुतियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि।
दुतियम्पि सङ्घं सरणं गच्छामि।

ततियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि।
ततियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि।
ततियम्पि सङ्घं सरणं गच्छामि।

– खु. पा. १.१-२, सरणत्तयं

आचरियो – तिसरणगमनं सम्पुण्णं।

सिस्सो – आम, भन्ते।

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४. त्रिशरण-शील-ग्रहण

शिष्य – अवकाश दीजिए, पूज्यवर! मैं त्रिशरण सहित पंचशील धर्म की याचना करता हूं। अनुग्रह करके मुझे शील दीजिए, पूज्यवर!

दूसरी वार भी, पूज्यवर! ०–

तीसरी वार भी, पूज्यवर! ०–

आचार्य – मैं जो कहूं, तुम वही कहो।

शिष्य – अच्छा, पूज्यवर!

नमस्कार है उन भगवान अर्हत सम्यक सम्बुद्ध को।

नमस्कार है उन भगवान अर्हत सम्यक सम्बुद्ध को।

नमस्कार है उन भगवान अर्हत सम्यक सम्बुद्ध को।

मैं बुद्ध की शरण जाता हूं।

मैं धर्म की शरण जाता हूं।

मैं संघ की शरण जाता हूं।

दूसरी वार भी मैं बुद्ध की शरण जाता हूं।

दूसरी वार भी मैं धर्म की शरण जाता हूं।

दूसरी वार भी मैं संघ की शरण जाता हूं।

तीसरी वार भी मैं बुद्ध की शरण जाता हूं।

तीसरी वार भी मैं धर्म की शरण जाता हूं।

तीसरी वार भी मैं संघ की शरण जाता हूं।

आचार्य – त्रिशरण गमन सम्पूर्ण हुआ।

शिष्य – अच्छा, पूज्यवर!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५. पञ्चसील-समादान

१. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
२. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
३. कामेसु-मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
४. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
५. सुरा-मेरय-मज्ज-पमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

आचरियो – तिसरणेन सद्धिं पञ्चसीलं धम्मं साधुकं सुरक्खितं कत्वा अप्पमादेन सम्पादेतब्बं।

सिस्सो – आम, भन्ते।

सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता!

– श्रामणेर-विनय
– खु. पा. २.२, दससिक्खापदं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५. पंचशील-ग्रहण

१. मैं प्राणी-हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
२. मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
३. मैं व्यभिचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
४. मैं मिथ्या-वचन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
५. मैं शराव, मदिरा आदि नशे तथा प्रमादकारी वस्तुओं के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।

आचार्य– त्रिशरण सहित पंचशील धर्म को भली प्रकार सुरक्षित रख कर अप्रमाद से इसका पालन करो!

शिष्य– अच्छा, पूज्यवर!

सारे प्राणी सुखी हों!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६. अट्ठङ्ग-उपोसथ-सीलानं याचना

सिस्सो – ओकास, अहं, भन्ते! तिसरणेन सद्धिं अट्ठङ्गसमन्नागतं
उपोसथसीलं धम्मं याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे, भन्ते!

दुतियम्पि, अहं, भन्ते! तिसरणेन सद्धिं अट्ठङ्गसमन्नागतं
उपोसथसीलं धम्मं याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे, भन्ते!

ततियम्पि, अहं, भन्ते! तिसरणेन सद्धिं अट्ठङ्गसमन्नागतं
उपोसथसीलं धम्मं याचामि। अनुग्गहं कत्वा सीलं देथ मे, भन्ते!

आचरियो – यमहं वदामि तं वदेहि।

सिस्सो – आम भन्ते!

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

बुद्धं सरणं गच्छामि।
धम्मं सरणं गच्छामि।
सङ्घं सरणं गच्छामि।

दुतियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि।
दुतियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि।
दुतियम्पि सङ्घं सरणं गच्छामि।

ततियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि।
ततियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि।
ततियम्पि सङ्घं सरणं गच्छामि।

– खु. पा. १.१, सरणत्तयं

आचरियो – तिसरणगमनं सम्पुण्णं।
सिस्सो – आम, भन्ते।

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६. अष्टांग-उपोसथ-शील-ग्रहण

शिष्य – अवकाश दीजिए, पूज्यवर! मैं त्रिशरण सहित अष्टशील धर्म की याचना करता हूं। अनुग्रह करके मुझे शील दीजिए, पूज्यवर!
दूसरी वार भी, पूज्यवर! ०–
तीसरी वार भी, पूज्यवर! ०–

आचार्य – मैं जो कहूं, तुम वही कहो।
शिष्य – अच्छा, पूज्यवर!

नमस्कार है उन भगवान अर्हत सम्यक सम्बुद्ध को।
नमस्कार है उन भगवान अर्हत सम्यक सम्बुद्ध को।
नमस्कार है उन भगवान अर्हत सम्यक सम्बुद्ध को।

मैं बुद्ध की शरण जाता हूं।
मैं धर्म की शरण जाता हूं।
मैं संघ की शरण जाता हूं।
दूसरी वार भी मैं बुद्ध की शरण जाता हूं।
दूसरी वार भी मैं धर्म की शरण जाता हूं।
दूसरी वार भी मैं संघ की शरण जाता हूं।
तीसरी वार भी मैं बुद्ध की शरण जाता हूं।
तीसरी वार भी मैं धर्म की शरण जाता हूं।
तीसरी वार भी मैं संघ की शरण जाता हूं।

आचार्य – त्रिशरण गमन सम्पूर्ण हुआ।
शिष्य – अच्छा, पूज्यवर!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७. अट्ठसील-समादान

१. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
२. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
३. अब्रह्मचरिया वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
४. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
५. सुरा-मेरय-मज्ज-पमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
६. विकाल-भोजना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
७. नच्च-गीत-वादित-विसूकदस्सना माला-गंध-विलेपन-धारण-मण्डन-विभूसनट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
८. उच्चासयन-महासयना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

आचरियो – तिसरणेन सद्धिं अट्ठङ्गसमन्नागतं उपोसथ-सीलं धम्मं साधुकं सुरक्खितं कत्वा अप्पमादेन सम्पादेहि।

सिस्सो – आम, भन्ते!

सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता!

– श्रामणेर-विनय

– खु. पा. २.२, दससिक्खापदं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७. अष्टशील-ग्रहण

१. मैं प्राणी-हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
२. मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
३. मैं व्यभिचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
४. मैं मिथ्या-वचन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
५. मैं शराव, मदिरा आदि नशे तथा प्रमादकारी वस्तुओं के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
६. मैं विकाल भोजन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
७. मैं नाच, गाने, वजाने और अशोभनीय खेल-तमाशे देखने तथा माला, सुगंध, लेप आदि धारण करने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।
८. मैं (वहुत) ऊंची और वड़ी (विलासितामय राजसी) शय्या पर सोने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।

आचार्य – त्रिशरण सहित अष्ट-उपोसथ-शील धर्म को भली प्रकार सुरक्षित रख कर अप्रमाद से इसका पालन करो।

शिष्य – अच्छा, पूज्यवर!

सारे प्राणी सुखी हों!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८. देव-आह्वानसुत्त

समन्ता चक्कवालेसु,
अत्रागच्छन्तु देवता।
सद्धम्मं मुनिराजस्स,
सुणन्तु सग्ग-मोक्खदं॥

धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता।
धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता।
धम्म-सवणकालो, अयं, भदन्ता॥

ये सन्ता सन्तचित्ता, तिसरण-सरणा,
एत्थ लोकन्तरे वा।
भुम्माभुम्मा च देवा, गुण-गण-गहणा,
व्यावटा सब्बकालं॥

एते आयन्तु देवा, वर-कनक-मये,
मेरुराजे वसन्तो।
सन्तो सन्तोसहेतुं, मुनिवर-वचनं,
सोतुमग्गं समग्गा॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८. देव-आवाहन-सुत्त

समस्त चक्रवालों के निवासी देवगण! यहां आएं और मुनिराज भगवान बुद्ध के स्वर्ग तथा मोक्षप्रदायक सद्धर्म को श्रवण करें!

धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!
धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!
धर्म श्रवण करने का यही (उपयुक्त) समय है, पूज्यवर!

जो शांत स्वभाव और शांत चित्त हैं,
त्रिशरण शरणागत हैं,
इस लोक एवं अन्य लोकों में रहने वाले हैं,
भूमि पर एवं आकाश में रहने वाले हैं,
जो सर्वदा गुणों को ग्रहण करने में ही रत हैं,

श्रेष्ठ स्वर्णमय सुमेरु पर्वतराज पर रहने वाले
ये सभी उपस्थित देवता संतोष के लिए
मुनिश्रेष्ठ के श्रेष्ठ वचन को सुनने के लिए
एक साथ आयें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

९. उग्घोसन-गाथा

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा नागगणा महेसिनो॥१॥

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा सुपण्णगणा महेसिनो॥२॥

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा देवगणा महेसिनो॥३॥

जयो हि बुद्धस्स सिरीमतो अयं,
मारस्स च पापिमतो पराजयो।
उग्घोसयुं बोधिमण्डे पमोदिता,
जयं तदा ब्रह्मगणा महेसिनो॥४॥

– अप. अट्ठ. १.८७-८८, अविदूरेनिदानकथा
– जा. अट्ठ. १.८४, अविदूरेनिदानकथा
– नमक्कार टीका - वर्मीज पृ. ५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

९. उद्घोषणा-गाथा

(जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब)
बोधिमंड पर प्रमुदित नागों ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की –
"श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है।
पापी मार की पराजय हो गयी है॥१॥

(जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब)
बोधिमंड पर प्रमुदित गरुड़ों ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की –
"श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है।
पापी मार की पराजय हो गयी है॥२॥

(जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब)
बोधिमंड पर प्रमुदित देवताओं ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की –
"श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है।
पापी मार की पराजय हो गयी है॥३॥

(जब महर्षि भगवान बुद्ध मार से संग्राम कर विजयी हुए तब)
बोधिमंड पर प्रमुदित ब्रह्माओं ने महर्षि की जय की उद्घोषणा की –
"श्रीसम्पन्न(महानुभाव) बुद्ध की विजय हो गयी है।
पापी मार की पराजय हो गयी है॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०. उदान-गाथा

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा,
यतो पजानाति सहेतुधम्मं ॥१॥

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कङ्खा वपयन्ति सब्बा,
यतो खयं पच्चयानं अवेदी ॥२॥

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
विधूपयं तिट्ठति मारसेनं,
सुरियोव ओभासयमन्तलिक्खं ॥३॥

– उदा. ६९-७१, पठमदुतियततियबोधिसुत्तं

– महाव. २-३, बोधिकथा

अनेकजातिसंसारं,
सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारं गवेसन्तो,
दुक्खा जाति पुनप्पुनं ॥४॥

गहकारक दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसङ्खितं।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा'ति ॥५॥

– ध. प. १५३-१५४, जरावग्गो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०. उदान-गाथा

जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तो वह प्रत्ययों सहित धर्म को जान लेता है और इस कारण उसके समस्त शंका-संदेह दूर हो जाते हैं॥१॥

जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तो वह प्रत्ययों के निरोध-क्षय होने को जान लेता है और इस कारण उसके समस्त शंका-संदेह दूर हो जाते हैं॥२॥

जब किसी तपस्वी और ध्यानी सत्पुरुष (श्रमण) ब्राह्मण को, सचमुच (बोधि-पक्षीय) धर्म उत्पन्न होते हैं, तो वह मार-सेना का विध्वंस कर वैसे ही स्थित होता है जैसे कि अंधकार को विध्वंस कर अंतरिक्ष में सूर्य प्रकाशमान होता है॥३॥

अनेक जन्मों तक बिना रुके संसार में दौड़ता रहा। (इस कायारूपी) घर बनाने वाले की खोज करते हुए पुनः पुनः दुःखमय जन्म में पड़ता रहा॥४॥

हे गृहकारक! अब तू देख लिया गया है! अब तू पुनः घर नहीं बना सकेगा! तेरी सारी कड़ियां भग्न हो गयी हैं। घर का शिखर भी विशृंखलित हो गया है। चित्त संस्कार-रहित हो गया है, तृष्णा का समूल नाश हो गया है॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

११. पटिच्चसमुप्पाद

अनुलोमं – अविज्जापच्चया सङ्खारा,
सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं,
विञ्ञाणपच्चया नाम-रूपं,
नाम-रूपपच्चया सळायतनं,
सळायतनपच्चया फस्सो,
फस्सपच्चया वेदना,
वेदनापच्चया तण्हा,
तण्हापच्चया उपादानं,
उपादानपच्चया भवो,
भवपच्चया जाति,
जातिपच्चया जरा-मरणं,
सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति।
एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होति।

पटिलोमं – अविज्जायत्वेव असेस-विराग-निरोधा सङ्खारनिरोधो,
सङ्खारनिरोधा विञ्ञाणनिरोधो,
विञ्ञाणनिरोधा नाम-रूपनिरोधो,
नाम-रूपनिरोधा सळायतननिरोधो,
सळायतननिरोधा फस्सनिरोधो,
फस्सनिरोधा वेदनानिरोधो,
वेदनानिरोधा तण्हानिरोधो,
तण्हानिरोधा उपादाननिरोधो,
उपादाननिरोधा भवनिरोधो,
भवनिरोधा जातिनिरोधो,
जातिनिरोधा जरा-मरणं,
सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सुपायासा निरुज्झन्ति।
एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होति॥

– महाव. १-२, बोधिकथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

११. प्रतीत्य-समुत्पाद

अनुलोम – अविद्या के प्रत्यय (कारण) से संस्कार,
संस्कार के प्रत्यय से विज्ञान,
विज्ञान के प्रत्यय से नाम-रूप,
नाम-रूप के प्रत्यय से छः-आयतन,
छः-आयतनों के प्रत्यय से स्पर्श,
स्पर्श के प्रत्यय से वेदना,
वेदना के प्रत्यय से तृष्णा,
तृष्णा के प्रत्यय से उपादान,
उपादान के प्रत्यय से भव,
भव के प्रत्यय से जाति (जन्म),
जाति के प्रत्यय से बूढ़ा होना, मरना, शोक करना, रोना, पीटना, दुःखित, बेचैन और परेशान होना होता है। इस प्रकार सारे के सारे दुःख-समुदाय का उदय होता है।

प्रतिलोम – अविद्या के संपूर्णतया निरुद्ध हो जाने से संस्कार का निरोध हो जाता है; संस्कार के निरुद्ध हो जाने से विज्ञान का निरोध हो जाता है; विज्ञान के निरुद्ध हो जाने से नाम-रूप का निरोध हो जाता है; नाम-रूप के निरुद्ध हो जाने से छह आयतनों का निरोध हो जाता है; छह आयतनों के निरुद्ध हो जाने से स्पर्श का निरोध हो जाता है; स्पर्श के निरुद्ध हो जाने से वेदना का निरोध हो जाता है; वेदना के निरुद्ध हो जाने से तृष्णा का निरोध हो जाता है; तृष्णा के निरुद्ध हो जाने से उपादान का निरोध हो जाता है; उपादान के निरुद्ध हो जाने से भव का निरोध हो जाता है; भव के निरुद्ध हो जाने से जन्म का निरोध हो जाता है; जन्म के निरुद्ध हो जाने से बूढ़ा होना, मरना, शोक करना, रोना, पीटना, दुःखित होना, बेचैन और परेशान होना निरुद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार सारे के सारे दुःख-समुदाय का निरोध हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२. पट्ठानपच्चयुद्देस

हेतु-पच्चयो। आरम्मण-पच्चयो।

अधिपति-पच्चयो। अनन्तर-पच्चयो।

समनन्तर-पच्चयो। सहजात-पच्चयो।

अञ्ञमञ्ञ-पच्चयो। निस्सय-पच्चयो।

उपनिस्सय-पच्चयो। पुरेजात-पच्चयो।

पच्छाजात-पच्चयो। आसेवन-पच्चयो।

कम्म-पच्चयो। विपाक-पच्चयो।

आहार-पच्चयो। इन्द्रिय-पच्चयो।

झान-पच्चयो। मग्ग-पच्चयो।

सम्पयुत्त-पच्चयो। विप्पयुत्त-पच्चयो।

अत्थि-पच्चयो। नत्थि-पच्चयो।

विगत-पच्चयो। अविगत-पच्चयो।

– पट्ठा. १.१.१, तिकपट्ठानं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२. पट्ठान-प्रत्यय-उद्देश्य

हेतु-प्रत्यय। आलंवन-प्रत्यय।

अधिपति-प्रत्यय। अनंतर-प्रत्यय।

समानांतर-प्रत्यय। सहजात-प्रत्यय।

अन्योन्य-प्रत्यय। निश्रय-प्रत्यय।

उपनिश्रय-प्रत्यय। पुरेजात-प्रत्यय।

पश्चात-जात-प्रत्यय। आसेवन-प्रत्यय।

कर्म-प्रत्यय। विपाक-प्रत्यय।

आहार-प्रत्यय। इन्द्रिय-प्रत्यय।

ध्यान-प्रत्यय। मार्ग-प्रत्यय।

संप्रयुक्त-प्रत्यय। विप्रयुक्त-प्रत्यय।

अस्ति-प्रत्यय। नास्ति-प्रत्यय।

विगत-प्रत्यय। अविगत-प्रत्यय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१३. जयमङ्गल-अट्ठगाथा

वाहुं सहस्समभिनिम्मित सावुधन्तं,
गिरिमेखलं उदितघोरससेनमारं।
दानादि-धम्मविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥१॥

मारातिरेकमभियुज्झितसब्बरत्तिं,
घोरम्पनालवकमक्खमथद्धयक्खं।
खन्ती सुदन्तविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥२॥

नालागिरिं गजवरं अतिमत्तभूतं,
दावग्गि-चक्कमसनीव सुदारुणन्तं।
मेत्तम्बुसेक-विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥३॥

उक्खित्त खग्गमतिहत्थ-सुदारुणन्तं,
धावन्ति योजनपथङ्गुलिमालवन्तं।
इद्धीभिसङ्खतमनो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१३. जयमंगल-अट्ठगाथा

गिरिमेखला नामक गजराज पर सवार अपनी ऋद्धि से निर्मित सहस्र भुजाओं में शस्त्र लिए मार को उसकी भीषण सेना सहित जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपनी दान आदि पारमिताओं के धर्मबल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥१॥

मार से भी बढ़-चढ़ कर सारी रात युद्ध करने वाले, अत्यंत दुर्धर्ष और कठोर हृदय आलवक नामक यक्ष को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपनी शांति और संयम के बल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥२॥

दावाग्नि-चक्र अथवा विद्युत की भांति अत्यंत दारुण और विपुल मदमत्त नालागिरि गजराज को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपने मैत्री रूपी जल की वर्षा से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥३॥

हाथ में तलवार उठा कर योजन तक दौड़ने वाले अत्यंत भयावह अंगुलिमाल को जिन मुनीन्द्र (भगवान बुद्ध) ने अपने ऋद्धिबल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कत्वान कट्ठमुदरं इव गब्भिनीया,
चिञ्चाय दुट्ठवचनं जनकाय-मज्झे।
सन्तेन सोमविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥५॥

सच्चं विहाय मतिसच्चक-वादकेतुं,
वादाभिरोपितमनं अतिअन्धभूतं।
पञ्ञापदीपजलितो जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥६॥

नन्दोपनन्द भुजगं विविधं महिद्धिं,
पुत्तेन थेर भुजगेन दमापयन्तो।
इद्धूपदेसविधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥७॥

दुग्गाहदिट्ठिभुजगेन सुदट्ठ-हत्थं,
ब्रह्मं विसुद्धिजुतिमिद्धिवकाभिधानं।
आणागदेन विधिना जितवा मुनिन्दो,
तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥८॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेट पर काठ वांध कर गर्भिणी का स्वांग करने वाली चिञ्चा के द्वारा जनता के मध्य कहे गये अपशब्दों को जिन मुनीन्द्र (भगवान वुद्ध) ने अपने शांत और सौम्य वल से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥५॥

सत्य-विमुख, असत्यवाद के पोषक, अभिमानी, वादविवाद- परायण और अहंकार से अत्यंत अंधे हुए सच्चक नामक परिव्राजक को जिन मुनीन्द्र (भगवान वुद्ध) ने प्रज्ञा-प्रदीप जला कर जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥६॥

विविध प्रकार की महान ऋद्धियों से संपन्न नन्दोपनन्द नामक भुजंग को अपने पुत्र (शिष्य) महामौद्गल्यायन स्थविर द्वारा अपनी ऋद्धि-शक्ति और उपदेश के वल से दमित कराते हुए जिन मुनीन्द्र (भगवान वुद्ध) ने जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥७॥

मिथ्यादृष्टि रूपी भयानक सर्प द्वारा डसे गये, शुद्ध- ज्योतिर्मय ऋद्धिसम्पन्न वकब्रह्मा को जिन मुनीन्द्र (भगवान वुद्ध) ने ज्ञान रूपी औषध से जीत लिया, उनके प्रताप (तेज) से तुम्हारी जय हो! तुम्हारा मंगल हो!!॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४. मङ्गलसुत्त

यं मङ्गलं द्वादसहि चिन्तयिंसु सदेवका।
सोत्थानं नाधिगच्छन्ति अट्ठतिंसञ्च मङ्गलं॥

देसितं देवदेवेन सब्बपापविनासनं।
सब्बलोक-हितत्थाय मङ्गलं तं भणामहे॥

एवं मे सुतं–

एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अञ्ञतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया, अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अज्झभासि :–

बहू देवा मनुस्सा च, मङ्गलानि अचिन्तयुं।
आकङ्खमाना सोत्थानं, ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं॥१॥

(भगवा)–

असेवना च बालानं, पण्डितानञ्च सेवना।
पूजा च पूजनीयानं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥२॥

पतिरूपदेसवासो च, पुब्बे च कतपुञ्ञता।
अत्त-सम्मापणिधि च, एतं मङ्गलमुत्तमं॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४. मंगल-सुत्त

जिन अड़तीस मंगल धर्मों के संबंध में बारह वर्षों तक (मनुष्य तथा) देवताओं सहित लोक में विचार किया, किंतु उनका ठीक से ज्ञान न हो सका, उन मंगलों का देवाधिदेव (भगवान बुद्ध) ने सब पापों के विनाश के लिए उपदेश दिया।

सर्व लोक-हित के लिए हम उन मंगल धर्मों को कह रहे हैं।

ऐसा मैंने सुना -

एक समय भगवान श्रावस्ती नगर के जेतवन उद्यान में (श्रेष्ठी) अनाथपिंडिक के (द्वारा बनवाये) संघाराम में विहार कर रहे थे। उस समय कोई एक दिव्य कांतिमान देवता अधिकांश रात्रि बीत जाने पर संपूर्ण जेतवन को (अपने दिव्यालोक से) आलोकित कर, जहां भगवान थे, वहां उनके समीप उपस्थित हुआ। उपस्थित हो, भगवान को अभिवादन कर, एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े हो उस देवता ने गाथा में भगवान से कहा : -

कल्याण की कामना करते हुए कितने ही देव और मनुष्य मंगलधर्मों के संबंध में चिंतन करते रहे हैं। आप ही कृपा कर बताइये कि वास्तविक उत्तम मंगल क्या हैं? १॥

(भगवान ने भी गाथा में ही कहा) : -

मूर्खों की संगति न करना, पंडितों (ज्ञानियों) की संगति करना और पूजनीय की पूजा करना - यह उत्तम मंगल है॥२॥

उपयुक्त स्थान में निवास करना, पूर्व जन्मों का संचित-पुण्य वाला होना और अपने आप को सम्यक रूप से समाहित रखना - यह उत्तम मंगल है॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहुसच्चञ्च सिप्पञ्च, विनयो च सुसिक्खितो।
सुभासिता च या वाचा, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥४॥

माता-पितु-उपट्ठानं, पुत्तदारस्स सङ्गहो।
अनाकुला च कम्मन्ता, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥५॥

दानञ्च धम्मचरिया च, ञातकानञ्च सङ्गहो।
अनवज्जानि कम्मानि, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥६॥

आरती विरती पापा, मज्जपाना च संयमो।
अप्पमादो च धम्मेसु, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥७॥

गारवो च निवातो च, सन्तुट्ठि च कतञ्ञुता।
कालेन धम्मस्सवनं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥८॥

खन्ती च सोवचस्सता, समणानञ्च दस्सनं।
कालेन धम्मसाकच्छा, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥९॥

तपो च ब्रह्मचरियञ्च, अरियसच्चान-दस्सनं।
निब्बानसच्छिकिरिया च, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥१०॥

फुट्ठस्स लोकधम्मेहि, चित्तं यस्स न कम्पति।
असोकं विरजं खेमं, एतं मङ्गलमुत्तमं ॥११॥

एतादिसानि कत्वान, सब्बत्थमपराजिता।
सब्बत्थसोत्थिं गच्छन्ति, तं तेसं मङ्गलमुत्तमं'ति ॥१२॥

– खु. पा. ५.४-५, मङ्गलसुत्तं
– सु. नि. १२३-१२४, मङ्गलसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक विद्याओं को अर्जित करना, शिल्प-कलाओं को सीखना, विनीत होना, सुशिक्षित होना और (वार्तालाप में) सुभाषी होना – यह उत्तम मंगल है ॥४॥

माता-पिता की सेवा करना, पुत्र-स्त्री (परिवार) का पालन-पोषण करना और आकुल-उद्विग्न न करने वाला (निष्पाप) व्यवसाय करना – यह उत्तम मंगल है ॥५॥

दान देना, धर्म का आचरण करना, बंधु-बांधवों की सहायता करना और अनवर्जित कर्म ही करना – यह उत्तम मंगल है ॥६॥

तन-मन से पापों का त्याग करना, मदिरा-सेवन से दूर रहना और कुशल धर्मों के पालन में सदा सचेत रहना – यह उत्तम मंगल है ॥७॥

(पूजनीय व्यक्तियों को) गौरव देना, सदा विनीत रहना, संतुष्ट रहना, दूसरों द्वारा किए गये उपकार को स्वीकार करना और उचित समय पर धर्म-श्रवण करना – यह उत्तम मंगल है ॥८॥

क्षमाशील होना, आज्ञाकारी होना, श्रमणों का दर्शन करना और उचित समय पर धर्म-चर्चा करना – यह उत्तम मंगल है ॥९॥

तप, ब्रह्मचर्य का पालन करना, आर्य-सत्यों का दर्शन करना और निर्वाण का साक्षात्कार करना – यह उत्तम मंगल है ॥१०॥

(लाभ-हानि, यश-अपयश, निंदा-प्रशंसा और सुख-दुःख इन) लोक-धर्मों के स्पर्श से जिसका चित्त कंपित नहीं होता, निःशोक, निर्मल और निर्भय रहता है – यह उत्तम मंगल है ॥११॥

इस प्रकार के कार्य करके (ये लोग) सर्वत्र अपराजित हो, सर्वत्र कल्याण-लाभी होते हैं। उन मंगल करने वालों के यही उत्तम मंगल हैं ॥१२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५. रतनसुत्त

कोटीसतसहस्सेसु, चक्कवालेसु देवता।
यस्साणं पटिगण्हन्ति, यञ्च वेसालिया पुरे॥
रोगामनुस्स-दुब्भिक्खं, सम्भूतं तिविधं भयं।
खिप्पमन्तरधापेसि, परित्तं तं भणामहे॥
यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे।
सब्बेव भूता सुमना भवन्तु,
अथोपि सक्कच्च सुणन्तु भासितं॥१॥

तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे,
मेत्तं करोथ मानुसिया पजाय।
दिवा च रत्तो च हरन्ति ये बलिं,
तस्मा हि ने रक्खथ अप्पमत्ता॥२॥
यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा,
सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं अत्थि तथागतेन,
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥३॥
खयं विरागं अमतं पणीतं,
यदज्झगा सक्यमुनी समाहितो।
न तेन धम्मेन समत्थि किञ्चि,
इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५. रतन-सुत्त

(एक बार जब वैशाली नगरी भयंकर रोगों, अमानवी उपद्रवों और दुर्भिक्ष-पीड़ाओं से संतप्त हो उठी, तो इन तीनों प्रकार के दुःखों का शमन करने के लिए महास्थविर आनंद ने भगवान के अनंत गुणों का स्मरण किया।)

शत-सहस्र-कोटि चक्रवालों के वासी सभी देवगण जिसके प्रताप को स्वीकार करते हैं तथा जिसके प्रभाव से वैशाली नगरी रोग, अमानवी उपद्रव और दुर्भिक्ष से उत्पन्न त्रिविध भय से तत्काल मुक्त हो गयी थी, उस परित्राण को कह रहे हैं।

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी (भूतादि) उपस्थित हैं, वे सौमनस्य-पूर्ण हों (प्रसन्न-चित्त हों) और इस कथन (धर्म-वाणी) को आदर के साथ सुनें॥१॥

(हे उपस्थित प्राणी) इस प्रकार (आप) सब ध्यान से सुनें और मनुष्यों के प्रति मैत्री-भाव रखें। जिन मनुष्यों से (आप) दिन-रात बलि (भेंट-पूजा-प्रसाद) ग्रहण करते हैं, प्रमाद रहित होकर उनकी रक्षा करें॥२॥

इस लोक में अथवा अन्य लोकों में जो भी धन-संपत्ति है और स्वर्गों में जो भी अमूल्य-रत्न हैं, उनमें से कोई भी तो तथागत (बुद्ध) के समान (श्रेष्ठ) नहीं है। (सचमुच) यह भी बुद्ध में उत्तम गुण-रत्न है – इस सत्य कथन के प्रभाव से कल्याण हो॥३॥

समाहित-चित्त से शाक्य-मुनि भगवान बुद्ध ने जिस राग-विमुक्त आश्रव-हीन श्रेष्ठ अमृत को प्राप्त किया था, उस लोकोत्तर निर्वाण-धर्म के समान अन्य कुछ भी नहीं है। (सचमुच) यह भी धर्म में उत्तम रत्न है – इस सत्य कथन के प्रभाव से कल्याण हो॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं,
समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहु।
समाधिना तेन समो न विज्जति,
इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥५॥

ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था,
चत्तारि एतानि युगानि होन्ति।
ते दक्खिणेय्या सुगतस्स सावका,
एतेसु दिन्नानि महप्फलानि,
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥६॥

ये सुप्पयुत्ता मनसा दळ्हेन,
निक्कामिनो गोतमसासनम्हि।
ते पत्तिपत्ता अमतं विगय्ह,
लद्धा मुधा निब्बुतिं भुञ्जमाना।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥७॥

यथिन्दखीलो पटविं सितो सिया,
चतुब्भि वातेहि असम्पकम्पियो।
तथूपमं सप्पुरिसं वदामि,
यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस परम विशुद्ध आर्य-मार्गिक समाधि की प्रशंसा स्वयं भगवान बुद्ध ने की है और जिसे "आनन्तरिक" याने तत्काल फलदायी कहा है, उसके समान अन्य कोई भी तो समाधि नहीं है। (सचमुच) यह भी धर्म में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥५॥

जिन आठ प्रकार के आर्य (पुद्गल) व्यक्तियों की संतों ने प्रशंसा की है, (मार्ग और फल की गणना से) जिनके चार जोड़े होते हैं, वे ही बुद्ध के श्रावक-संघ (शिष्य) दक्षिणा के उपयुक्त पात्र हैं। उन्हें दिया गया दान महाफलदायी होता है। (सचमुच) यह भी संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥६॥

जो (आर्य पुद्गल) भगवान बुद्ध के (साधना) शासन में दृढ़ता-पूर्वक एकाग्रचित्त और वितृष्ण हो कर संलग्न हैं, तथा जिन्होंने सहज ही अमृत में गोता लगा कर अमूल्य निर्वाण-रस का आस्वादन कर लिया है और प्राप्तव्य को प्राप्त कर लिया है (उत्तम अरहंत फल को पा लिया है)। (सचमुच) यह भी संघ में उत्तम रत्न है- इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥७॥

जिस प्रकार पृथ्वी में (दृढ़ता से) गड़ा हुआ इंद्र-कील (नगर-द्वार-स्तंभ) चारों ओर के पवन-वेग से भी प्रकंपित नहीं होता, उस प्रकार के व्यक्ति को ही मैं सत्पुरुष कहता हूं, जिसने (भगवान के साधना-पथ पर चल कर) आर्यसत्यों का सम्यक दर्शन (साक्षात्कार) कर उन्हें स्पष्टरूप से जान लिया है; (वह आर्य-पुद्गल भी प्रत्येक अवस्था में अविचलित रहता है)। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये अरियसच्चानि विभावयन्ति,
गम्भीरपञ्ञेन सुदेसितानि।
किञ्चापि ते होन्ति भुसप्पमत्ता,
न ते भवं अट्ठममादियन्ति।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥९॥

सहावस्स दस्सन-सम्पदाय,
तयस्सु धम्मा जहिता भवन्ति।
सक्कायदिट्ठि विचिकिच्छितं च,
सीलब्बतं वा पि यदत्थि किञ्चि॥१०॥

चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो,
छच्चाभिठानानि अभब्बो कातुं।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥११॥

किञ्चापि सो कम्मं करोति पापकं,
कायेन वाचा उद चेतसा वा।
अभब्बो सो तस्स पटिच्छादाय,
अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥१२॥

वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे,
गिम्हानमासे पठमस्मिं गिम्हे।
तथूपमं धम्मवरं अदेसयि,
निब्बानगामिं परमं हिताय।
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥१३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्होंने गंभीर-प्रज्ञावान भगवान बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट आर्यसत्यों का भली प्रकार साक्षात्कार कर लिया है, वे (स्रोतापन्न) यदि किसी कारण से बहुत प्रमादी भी हो जायं (और साधना के अभ्यास में सतत तत्पर न भी रहें) तो भी आठवां जन्म ग्रहण नहीं करते। (अधिक से अधिक सातवें जन्म में उनकी मुक्ति निश्चित है।) (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो॥९॥

दर्शन-प्राप्ति (स्रोतापन्न फल प्राप्ति) के साथ ही उसके (स्रोतापन्न व्यक्ति के) तीन बंधन छूट जाते हैं – सत्कायदृष्टि (आत्म सम्मोह), विचिकित्सा (संशय), शीलव्रत परामर्श (विभिन्न व्रतों आदि कर्मकांडों से चित्तशुद्धि होने का विश्वास) अथवा अन्य जो कुछ भी ऐसे बंधन हों ...॥१०॥

वह चार अपाय गतियों (निरय लोकों) से पूरी तरह मुक्त हो जाता है। छह घोर पाप कर्मों (मातृ-हत्या, पितृ-हत्या, अर्हत-हत्या, बुद्ध का रक्तपात, संघ-भेद एवं मिथ्या आचार्यों के प्रति श्रद्धा) को कभी नहीं करता। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो॥११॥

भले ही वह (स्रोतापन्न व्यक्ति) काय, वचन अथवा मन से कोई पाप कर्म कर भी ले तो उसे छिपा नहीं सकता। (भगवान ने कहा है) निर्वाण का साक्षात्कार कर लेने वाला अपने दुष्कृत कर्म को छिपाने में असमर्थ है। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो॥१२॥

ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभिक मास में जिस प्रकार सघन वन प्रफुल्लित वृक्षशिखरों से शोभायमान होता है, उसी प्रकार भगवान बुद्ध ने श्रेष्ठ धर्म का उपदेश दिया जो निर्वाण की ओर ले जाने वाला तथा परम हितकारी (यह लोकोत्तर धर्म शोभायमान) है। (सचमुच) यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो॥१३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरो वरञ्ञू वरदो वराहरो,
अनुत्तरो धम्मवरं अदेसयि।
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥१४॥

खीणं पुराणं नवं नत्थि सम्भवं,
विरत्तचित्तायतिके भवस्मिं।
ते खीणबीजा अविरूळ्हिछन्दा,
निब्बन्ति धीरा यथा'यं पदीपो।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं,
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥१५॥

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानिव अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु॥१६॥

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानिव अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु॥१७॥

यानीध भूतानि समागतानि,
भुम्मानि वा यानिव अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं,
सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतु॥१८॥

– खु. पा. ६.५-७, रतनसुत्तं
– सु. नि. २१८-२२०, रतनसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ ने, श्रेष्ठ को जानने वाले, श्रेष्ठ को देने वाले तथा श्रेष्ठ को लाने वाले श्रेष्ठ (बुद्ध) ने अनुत्तर धर्म की देशना की। यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है। इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥१४॥

जिनके सारे पुराने कर्म क्षीण हो गये हैं और नये कर्मों की उत्पत्ति नहीं होती; पुनर्जन्म में जिनकी आसक्ति समाप्त हो गयी है, वे क्षीण-वीज (अरहंत) तृष्णा-विमुक्त हो गये हैं। वे इसी प्रकार निर्वाण को प्राप्त होते हैं जैसे (कि तेल समाप्त होने पर) यह प्रदीप। (सचमुच) यह भी (आर्य) संघ में श्रेष्ठ रत्न है – इस सत्य के प्रभाव से कल्याण हो ॥१५॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो ॥१६॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत और धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो ॥१७॥

इस समय धरती या आकाश में रहने वाले जो भी प्राणी यहां उपस्थित हैं, हम सभी समस्त देवों और मनुष्यों द्वारा पूजित तथागत और संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो ॥१८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६. करणीयमेत्त-सुत्त

यस्सानुभावतो यक्खा, नेव दस्सेन्ति भीसनं।
यञ्हि चेवानुयुञ्जन्तो, रत्तिन्दिवमतन्दितो॥

सुखं सुपति सुत्तो च, पापं किञ्चि न पस्सति।
एवमादि गुणूपेतं, परित्तं तं भणामहे॥

करणीयमत्थकुसलेन, यन्तं सन्तं पदं अभिसमेच्च।
सक्को उजू च सुहुजू च, सुवचो चस्स मुदु अनतिमानी॥१॥

सन्तुस्सको च सुभरो च, अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ति।
सन्तिन्द्रियो च निपको च, अप्पगब्भो कुलेस्वननुगिद्धो॥२॥

न च खुद्दं समाचरे किञ्चि, येन विञ्ञू परे उपवदेय्युं।
सुखिनो व खेमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता॥३॥

ये केचि पाणभूतत्थि, तसा वा थावरा वनवसेसा।
दीघा वा ये व महन्ता, मज्झिमा रस्सका अणुकथूला॥४॥

दिट्ठा वा येव अदिट्ठा, ये च दूरे वसन्ति अविदूरे।
भूता वा सम्भवेसी वा, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६. करणीयमेत्त-सुत्त

जिसके प्रभाव से यक्ष अपना भीषण भय-रूप नहीं दिखा सकते और जिसके दिन-रात के विना थके अभ्यास करने से सोया हुआ सुख की नींद सोता है, तथा सोया हुआ व्यक्ति कोई दुःस्वप्न (पाप) नहीं देखता है इत्यादि, इस प्रकार के गुणों से युक्त उस परित्राण को कह रहे हैं :-

जो परमपद निर्वाण प्राप्त कर अर्थकुशल है उस समझदार व्यक्ति को चाहिए कि वह सुयोग्य वने, सरल वने, अति सरल वने, सुभाषी वने, मृदु स्वभाव वाला वने और निरभिमानी वने ॥१॥

वह सदा संतुष्ट रहे, सहज सुपोष्य रहे, अनेक कामों में व्यस्त न रहे, सादगी का जीवन अपनाये, शांत इन्द्रिय वने, परिपक्व प्रज्ञावान वने, लापरवाह न रहे, कुलों में अत्यंत आसक्त न रहे ॥२॥

वह यत्किंचित भी दुराचरण न करे जिसके कारण वाद में अन्य विज्ञजन उसे वुरा कहें। वह अपने मन में सदैव यही मैत्री-भावना करे - सारे प्राणी सुखी हों! निर्भय, क्षेमयुक्त हों! सभी सत्व सुख-लाभ करें ॥३॥

वे प्राणी चाहे स्थावर हों या जंगम, दीर्घ (देहधारी) हों या महान (देहधारी), मध्यम (देहधारी) हों, या ह्रस्व (देहधारी), सूक्ष्म (देहधारी) हों या स्थूल (देहधारी) ... ॥४॥

दृश्य हों या अदृश्य, सुदूरवासी हों या समीपवासी, उत्पन्न हों या उत्पन्न होने वाले हों, वे सभी सत्त्व सुखपूर्वक रहें ॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न परो परं निकुब्बेथ, नातिमञ्ञेथ कत्थचि न कञ्चि।
ब्यारोसना पटिघसञ्ञा, नाञ्ञमञ्ञस्स दुक्खमिच्छेय्य ॥६॥

माता यथा नियं पुत्तं, आयुसा एकपुत्तमनुरक्खे।
एवम्पि सब्बभूतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं ॥७॥

मेतञ्च सब्बलोकस्मिं, मानसं भावये अपरिमाणं।
उद्धं अधो च तिरियञ्च, असम्बाधं अवेरमसपत्तं ॥८॥

तिट्ठं चरं निसिन्नो वा, सयानो वा यावतस्स विगतमिद्धो।
एतं सतिं अधिट्ठेय्य, ब्रह्ममेतं विहारमिधमाहु ॥९॥

दिट्ठिञ्च च अनुपगम्म, सीलवा दस्सनेन सम्पन्नो।
कामेसु विनेय्य गेधं, न हि जातुगब्भसेय्यं पुनरेति ॥१०॥

– खु. पा. ९.११-१२. मेत्तसुत्तं
– सु. नि. १०६-१०७. मेत्तसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दूसरे को नहीं ठगे, किसी का कहीं भी अनादर न करे, क्रोध या वैमनस्य के वशीभूत होकर एक दूसरे के दुःख की कामना न करे॥६॥

जिस प्रकार जीवन के मूल्य पर भी मां अपने इकलौते पुत्र की रक्षा करती है, उसी प्रकार (वह भी) समस्त प्राणियों के प्रति अपने मन में अपरिमित मैत्री-भाव बढ़ाये॥७॥

वह अपरिमित मैत्री-भावना विना किसी बाधा, घृणा और शत्रुता के, ऊपर-नीचे और आड़े-तिरछे समस्त लोकों में व्याप्त करे॥८॥

चाहे खड़ा हो, चलता हो, बैठा हो या लेटा हो, जब तक निद्रा के अधीन नहीं है, स्मृतिमान हो, इस अपरिमित मैत्री की भावना करे। इसी को ब्रह्म-विहार कहते हैं॥९॥

इस प्रकार वह (मैत्री ब्रह्म-विहार करने वाला साधक) किसी मिथ्या-दृष्टि में नहीं पड़ता। वह शील और प्रज्ञा-दृष्टि संपन्न हो जाता है। काम-तृष्णा का नाश कर लेता है और पुनः गर्भ में नहीं आता अर्थात् गर्भ-शयन (पुनर्जन्म) के दुःख से नितांत मुक्ति पा लेता है॥१०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७. मेत्ता-भावना

अहं अवेरो होमि, अव्यापज्झो होमि।
अनीघो होमि, सुखी अत्तानं परिहरामि ॥१॥

माता-पितु-आचरिय-ञाति-समूहा,
अवेरा होन्तु, अव्यापज्झा होन्तु।
अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु ॥२॥

आरक्खदेवता भूम्मट्ठदेवता रुक्खट्ठदेवता
आकासट्ठदेवता, अवेरा होन्तु, अव्यापज्झा होन्तु।
अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु ॥३॥

पुरत्थिमाय दिसाय, पच्छिमाय दिसाय,
उत्तराय दिसाय, दक्खिणाय दिसाय,
हेट्ठिमाय दिसाय, उपरिमाय दिसाय,
पुरत्थिमाय अनुदिसाय, पच्छिमाय अनुदिसाय,
उत्तराय अनुदिसाय, दक्खिणाय अनुदिसाय,
सब्बे सत्ता, सब्बे पाणा, सब्बे भूता, सब्बे पुग्गला,
सब्बे अत्तभावपरियापन्ना, सब्बा इत्थियो, सब्बे पुरिसा,
सब्बे अरिया, सब्बे अनरिया, सब्बे देवा, सब्बे मनुस्सा,
सब्बे अमनुस्सा, सब्बे विनिपातिका,
अवेरा होन्तु, अव्यापज्झा होन्तु।
अनीघा होन्तु, सुखी अत्तानं परिहरन्तु ॥४॥

– विसुद्धि. १.२९९-३००, मेत्ताभावनाकथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७. मैत्री-भावना

मैं वैर-विहीन होऊं, व्यापाद (द्वेष)-विहीन होऊं,
क्रोध-विहीन होऊं, सुखपूर्वक अपना संरक्षण करूं॥१॥

मेरे माता-पिता, आचार्य और ज्ञाति (जाति)-बंधु वैर-विहीन हों, व्यापाद (द्वेष)-विहीन हों, क्रोध-विहीन हों, सुख-पूर्वक अपना संरक्षण करें॥२॥

रक्षा करने वाले देव, भू-देव, वृक्षवासी देव, आकाशवासी देव वैर-विहीन हों, व्यापाद (द्वेष)-विहीन हों, क्रोध-विहीन हों, सुखपूर्वक अपना संरक्षण करें॥३॥

पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा,
उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा,
नीचे की दिशा, ऊपर की दिशा,
पूर्व-दक्षिण दिशा, पश्चिम-दक्षिण दिशा,
पूर्व-उत्तर दिशा, पश्चिम-उत्तर दिशा अर्थात
(दशों दिशाओं) के सभी सत्व, सभी प्राणी,
सभी जीव, सभी पुद्गल, जन्म ग्रहण किए सभी व्यक्ति,
सभी स्त्रियां, सभी पुरुष, सभी आर्य, सभी अनार्य,
सभी देव, सभी मनुष्य, सभी अमनुष्य,
और सभी नरकगामी – वैर-विहीन हों,
व्यापाद (द्वेष)-विहीन हों, क्रोध-विहीन हों,
सुखपूर्वक अपना संरक्षण करें॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्धं याव भवग्गा च,
अधो याव अवीचितो।
समन्ता चक्कवाळेसु,
ये सत्ता पठवीचरा।
अब्यापज्झा अवेरा च,
निदुक्खा चानुपद्दवा ॥५॥

उद्धं याव भवग्गा च,
अधो याव अवीचितो।
समन्ता चक्कवाळेसु,
ये सत्ता उदकेचरा।
अब्यापज्झा अवेरा च,
निदुक्खा चानुपद्दवा ॥६॥

उद्धं याव भवग्गा च,
अधो याव अवीचितो।
समन्ता चक्कवाळेसु,
ये सत्ता आकासेचरा।
अब्यापज्झा अवेरा च,
निदुक्खा चानुपद्दवा ॥७॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर भवाग्र से लेकर
नीचे अवीचि नरक तक
सभी चक्रवालों के
थलचर प्राणी
द्वेष-विहीन हों, वैर-विहीन हों,
दुःख-विहीन हों, उपद्रव-विहीन हों ॥५॥

ऊपर भवाग्र से लेकर
नीचे अवीचि नरक तक
सभी चक्रवालों के
जलचर प्राणी
द्वेष-विहीन हों, वैर-विहीन हों,
दुःख-विहीन हों, उपद्रव-विहीन हों ॥६॥

ऊपर भवाग्र से लेकर
नीचे अवीचि नरक तक
सभी चक्रवालों के
नभचर प्राणी
द्वेष-विहीन हों, वैर-विहीन हों,
दुःख-विहीन हों, उपद्रव-विहीन हों ॥७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८. मित्तानिसंससुत्त

पूरेन्तो बोधिसम्भारे, नाथो तेमिय जातियं।
मित्तानिसंसं यं आह, सुनन्दं नाम सारथिं।
सब्बलोकहितत्थाय, परित्तं तं भणामहे॥

पहूतभक्खो भवति, विप्पवुत्थो सका घरा।
बहूनं उपजीवन्ति, यो मित्तानं न दुब्भति॥१॥

यं यं जनपदं याति, निगमे राजधानियो।
सब्बत्थ पूजितो होति, यो मित्तानं न दुब्भति॥२॥

नास्स चोरा पसहन्ति, नातिमञ्ञेति खत्तियो।
सब्बे अमित्ते तरति, यो मित्तानं न दुब्भति॥३॥

अक्कुद्धो सघरं एति, सभायं पटिनन्दितो।
ञातीनं उत्तमो होति, यो मित्तानं न दुब्भति॥४॥

सक्कत्वा सक्कतो होति, गरू होति सगारवो।
वण्णकित्तिभतो होति, यो मित्तानं न दुब्भति॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८. मैत्री-महिमा-सुत्त

बोधि के लिए पारमिताओं को पूर्ण करते हुए (बोधिसत्त्व) नाथ ने तेमिय के रूप में जन्म ले कर सुनन्द नामक सारथी को मैत्री की महानता का आख्यान किया, उस परित्राण को सारे लोक के हित के लिए कह रहे हैं –

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; वह अपने घर से बाहर (प्रवास में जाने पर) खाद्य-भोग का भागी होता है, उसके सहारे अनेकों की जीविका चलती है॥१॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; वह जिस-जिस जनपदों, कस्बों और राजधानियों में जाता है, सर्वत्र पूजित होता है॥२॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; उसे चोर परेशान नहीं करते, राजा उसका अनादर नहीं करता, वह सभी शत्रुओं पर विजय पा लेता है॥३॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; वह प्रसन्नचित्त से अपने घर लौटता है, सभा में उसका स्वागत होता है, जाति-बिरादरी में वह उत्तम माना जाता है॥४॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; वह सत्कार करके सत्कार पाता है, गौरव करके गौरवशाली होता है, वह प्रशंसा और कीर्ति का भागी होता है॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजको लभते पूजं, वन्दको पटिवन्दनं।
यसो कित्तिञ्च पप्पोति, यो मित्तानं न दुब्भति॥६॥

अग्गि यथा पज्जलति, देवताव विरोचति।
सिरिया अजहितो होति, यो मित्तानं न दुब्भति॥७॥

गावो तस्स पजायन्ति, खेत्ते वुत्तं विरूहति।
वुत्तानं फलमस्नाति, यो मित्तानं न दुब्भति॥८॥

दरितो पब्बततो वा, रुक्खतो पतितो नरो।
चुतो पतिट्ठं लभति, यो मित्तानं न दुब्भति॥९॥

विरूळ्हमूलसन्तानं, निग्रोधमिव मालुतो।
अमित्ता नप्पसहन्ति, यो मित्तानं न दुब्भति॥१०॥

– जा. २.२२.१०३, मूगपक्खजातक (५३८)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; उस पूजा करने वाले की पूजा होती है, वंदना करने वाले की वंदना होती है, वह यश और कीर्ति को प्राप्त होता है॥६॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; वह आग के समान प्रज्वलित होता है, देवता के समान प्रकाशमान होता है, श्री-युक्त होता है॥७॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; उसकी गायें प्रजनन करती हैं, खेत में वोया वढ़ता है और जो वोता है उसका वह फल खाता है॥८॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; दर्रे, पर्वत अथवा वृक्ष से गिरा हुआ वह व्यक्ति, गिर कर भी सहारा पा लेता है॥९॥

जो मित्रों को धोखा नहीं देता; उसे शत्रु पराजित नहीं कर सकते, वैसे ही जैसे कि मजवूत जड़ वाले वड़े वरगद के वृक्ष का हवा (आंधी) कुछ भी नहीं विगाड़ सकती॥१०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९. पराभवसुत्त

एवं मे सुतं–

एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अञ्ञतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि। उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अज्झभासि–

पराभवन्तं पुरिसं, मयं पुच्छाम गोतमं।
भगवन्तं पुट्ठुमागम्म, किं पराभवतो मुखं॥१॥

सुविजानो भवं होति, सुविजानो पराभवो।
धम्मकामो भवं होति, धम्मदेस्सी पराभवो॥२॥

इति हेतं विजानाम, पठमो सो पराभवो।
दुतियं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥३॥

असन्तस्स पिया होन्ति, सन्ते न कुरुते पियं।
असतं धम्मं रोचेति, तं पराभवतो मुखं॥४॥

इति हेतं विजानाम, दुतियो सो पराभवो।
ततियं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥५॥

निद्दासीली सभासीली, अनुट्ठाता च यो नरो।
अलसो कोधपञ्ञाणो, तं पराभवतो मुखं॥६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९. पराभव(अवनति)-सुत्त

ऐसा मैंने सुना –

एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार कर रहे थे। उस समय एक देवता रात्रि वीतने पर अपनी उज्ज्वल कांति से सारे जेतवन को प्रकाशित कर जहां भगवान थे वहां गया, और भगवान के समीप जाकर उन्हें अभिवादन कर एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े होकर उस देवता ने भगवान से गाथा में यह प्रश्न पूछा –

हम आप गौतम से अवनति की ओर जानेवाले पुरुष के विषय में पूछने आये हैं। भगवन! वतायें कि अवनति का क्या कारण है?॥१॥

(इस प्रकार उस देवता की प्रार्थना पर भगवान ने भी गाथा में उत्तर दिया) –

उन्नतिशील व्यक्ति की पहचान सरल है। अवनतिगामी की भी पहचान सरल है। धर्म-प्रेमी की उन्नति होती है और धर्म-द्वेषी की अवनति॥२॥

देवता – अवनति के इस पहले कारण को तो हमने जान लिया। अव भगवन! अवनति का दूसरा कारण वतायें॥३॥

भगवान – जव उसको असंतजन प्रिय लगते हैं और संत अप्रिय; जव उसे असन्तों के आचरण रुचिकर प्रतीत होते हैं, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥४॥

देवता – अवनति के इस दूसरे कारण को भी हमने जान लिया। अव भगवन! अवनति का तीसरा कारण वतायें॥५॥

भगवान – जो व्यक्ति निद्रालु, सभा में जुटा रहने वाला, अनुद्योगी, आलसी और क्रोधी होता है, तो वह उसकी अवनति का कारण होता है॥६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति हेतं विजानाम, ततियो सो पराभवो।
चतुत्थं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥७॥

यो मातरं वा पितरं वा, जिण्णकं गतयोब्बनं।
पहु सन्तो न भरति, तं पराभवतो मुखं॥८॥

इति हेतं विजानाम, चतुत्थो सो पराभवो।
पञ्चमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥९॥

यो ब्राह्मणं समणं वा, अञ्ञं वापि वनिब्बकं।
मुसावादेन वञ्चेति, तं पराभवतो मुखं॥१०॥

इति हेतं विजानाम, पञ्चमो सो पराभवो।
छट्ठमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥११॥

पहूतवित्तो पुरिसो, सहिरञ्ञो सभोजनो।
एको भुञ्जति सादूनि, तं पराभवतो मुखं॥१२॥

इति हेतं विजानाम, छट्ठमो सो पराभवो।
सत्तमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥१३॥

जातित्थद्धो धनत्थद्धो, गोत्तत्थद्धो च यो नरो।
सञ्ञातिं अतिमञ्ञेति, तं पराभवतो मुखं॥१४॥

इति हेतं विजानाम, सत्तमो सो पराभवो।
अट्ठमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥१५॥

इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो।
लद्धं लद्धं विनासेति, तं पराभवतो मुखं॥१६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवता – अवनति के इस तीसरे कारण को हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का चौथा कारण बतायें॥७॥

भगवान – जो व्यक्ति समर्थ होते हुए भी अपने वृद्ध एवं जीर्ण माता या पिता का भरण-पोषण नहीं करता है, तो वह उसकी अवनति का कारण होता है॥८॥

देवता – अवनति के इस चौथे कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का पांचवा कारण बतायें॥९॥

भगवान – जब कोई मनुष्य किसी श्रमण, ब्राह्मण अथवा अन्य याचक को कुछ न देने की मंशा से झूठ बोलकर धोखा देता है, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥१०॥

देवता – अवनति के इस पांचवे कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का छठा कारण बतायें॥११॥

भगवान – किसी के पास प्रचुर मात्रा में धन-संपत्ति हो, हिरण्य-सुवर्ण हो, भोजन-सामग्रियां हों, तब भी अकेला सुस्वादु मदार्थों का उपभोग करता हो, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥१२॥

देवता – अवनति के इस छठे कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का सातवां कारण बतायें॥१३॥

भगवान – जो व्यक्ति अपनी जाति, धन-संपदा और गोत्र का अभिमान करता है और इस प्रकार अभिमानवश अपने बंधुओं का निरादर करता है, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥१४॥

देवता – अवनति के इस सातवें कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का आठवां कारण बतायें॥१५॥

भगवान – जो व्यक्ति स्त्रियों में, शराब और जुए में रत रहता हो, सारे कमाये धन को नष्ट करता हो, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥१६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति हेतं विजानाम, अट्ठमो सो पराभवो।
नवमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥१७॥

सेहि दारेहि असन्तुट्ठो, वेसियासु पदिस्सति।
दिस्सति परदारेसु, तं पराभवतो मुखं॥१८॥

इति हेतं विजानाम, नवमो सो पराभवो।
दसमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥१९॥

अतीतयोब्बनो पोसो, आनेति तिम्बरुत्थनिं।
तस्सा इस्सा न सुपति, तं पराभवतो मुखं॥२०॥

इति हेतं विजानाम, दसमो सो पराभवो।
एकादसमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥२१॥

इत्थिसोण्डिं विकिरणिं, पुरिसं वापि तादिसं।
इस्सरियस्मिं ठपेति, तं पराभवतो मुखं॥२२॥

इति हेतं विजानाम, एकादसमो सो पराभवो।
द्वादसमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं॥२३॥

अप्पभोगो महातण्हो, खत्तिये जायते कुले।
सो च रज्जं पत्थयति, तं पराभवतो मुखं॥२४॥

एते पराभवे लोके, पण्डितो समवेक्खिय।
अरियो दस्सनसम्पन्नो, स लोकं भजते सिवन्ति॥२५॥

– सु. नि. १००-१०२, पराभवसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवता – अवनति के इस आठवें कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का नवां कारण बतायें॥१७॥

भगवान – जो अपनी पत्नी से असंतुष्ट रहता हो, वेश्याओं और पराई स्त्रियों के साथ दिखाई देता हो, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥१८॥

देवता – अवनति के इस नवें कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का दसवां कारण बतायें॥१९॥

भगवान – वृद्ध व्यक्ति जब नवयुवती को (व्याह) लाये और उससे अविश्वास एवं ईर्ष्या के कारण वह सो न सके, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥२०॥

देवता – अवनति के इस दसवें कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का ग्यारहवां कारण बतायें॥२१॥

भगवान – जब किसी लालची या सम्पत्ति को नष्ट करने वाली अपव्ययी स्त्री या पुरुष को संपत्ति का मालिक बना दिया जाय, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥२२॥

देवता – अवनति के इस ग्यारहवें कारण को भी हमने जान लिया। अब भगवन! अवनति का बारहवां कारण बतायें॥२३॥

भगवान – क्षत्रिय कुल में उत्पन्न अल्प संपत्ति वाला और महालालची पुरुष जब राज्य की कामना करता है, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥२४॥

बुद्धिमान आर्य व्यक्ति संसार में अवनति के इतने कारणों को जानकर दर्शन युक्त हो स्वर्ग लोक को प्राप्त होता है॥२५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०. आटानाटियसुत्त

अप्पसन्नेहि नाथस्स, सासने साधु सम्मते।
अमनुस्सेहि चण्डेहि, सदा किब्बिसकारिभि॥

परिसानं चतस्सन्नं, अहिंसाय च गुत्तिया।
यं देसेसि महावीरो, परित्तं तं भणामहे॥

विपस्सिस्स च नमत्थु, चक्खुमन्तस्स सिरीमतो।
सिखिस्सपि च नमत्थु, सब्ब भूतानुकम्पिनो॥१॥

वेस्सभुस्स च नमत्थु, न्हातकस्स तपस्सिनो।
नमत्थु ककुसन्धस्स, मारसेनप्पमद्दिनो॥२॥

कोणागमनस्स नमत्थु, ब्राह्मणस्स वुसीमतो।
कस्सपस्स च नमत्थु, विप्पमुत्तस्स सब्बधि॥३॥

अङ्गीरसस्स नमत्थु, सक्यपुत्तस्स सिरीमतो।
यो इमं धम्मं देसेसि, सब्बदुक्खापनूदनं॥४॥

ये चापि निब्बुता लोके, यथाभूतं विपस्सिसुं।
ते जना अपिसुणाथ, महन्ता वीतसारदा॥५॥

हितं देव-मनुस्सानं, यं नमस्सन्ति गोतमं।
विज्जाचरण-सम्पन्नं, महन्तं वीतसारदं॥६॥

एते चञ्ञे च सम्बुद्धा, अनेकसत-कोटियो।
सब्बे बुद्धा समसमा, सब्बे बुद्धा महिद्धिका॥७॥

– दी. नि. ३.१५९, आटानाटियसुत्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०. आटानाटिय-सुत्त

भगवान के साधु-सम्मत धर्म के प्रति अप्रसन्न रहने वाले, सद्भावना न रखने वाले, चंड स्वभाव वाले अमनुष्य (यक्ष, देव आदि) सर्वदा दुष्ट कर्मों में ही लीन रहते हैं।

चतुर्वर्गीय परिषद (भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिका) को ऐसे दुष्ट कष्ट न दें और उनकी रक्षा हो सके, इस निमित्त महावीर भगवान बुद्ध ने इस (आटानाटिय-सुत्त) परित्राण की देशना की थी, उसे हम कह रहे हैं –

अंतर्चक्षु प्राप्त श्रीमान (भगवान) विपस्सी बुद्ध को नमस्कार है! सब प्राणियों पर अनुकम्पा करने वाले (भगवान) सिखी बुद्ध को नमस्कार है!! १॥

समस्त क्लेशों को धो देने वाले तपस्वी (भगवान) वेस्सभु बुद्ध को नमस्कार है! मार सेना का मर्दन करने वाले (भगवान) ककुसन्ध बुद्ध को नमस्कार है!!२॥

पूर्णता प्राप्त ब्राह्मण (भगवान) कोणागमन को नमस्कार है! सभी क्लेशों से पूर्णतया विमुक्त (भगवान) कस्सप बुद्ध को नमस्कार है!!३॥

जिनके अंग-अंग से प्रकाश प्रस्फुटित होता है ऐसे अंगीरस श्रीमान शाक्यपुत्र (भगवान गौतम बुद्ध) को नमस्कार है, जिन्होंने सभी दुःखों के विनाश हेतु यह धर्म-देशना दी है॥४॥

विपश्यना भावना द्वारा धर्म का यथाभूत दर्शन कर जो अरहन्त जन इस लोक में ही निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं, वे महान और बुद्धिमान हैं, जिनकी वाणी शुद्ध है॥५॥

जो विद्याचरणसंपन्न, महान और प्रज्ञावान, बुद्ध को देव-मनुष्यों के हित के लिए नमस्कार करते हैं॥६॥

उपरोक्त सम्यक संबुद्धों के अतिरिक्त जो अनेक शत-कोटि सम्यक संबुद्ध हुए हैं वे अन्य किसी की भी तुलना में अ-सम हैं, महान हैं; परंतु पारस्परिक तुलना में सभी सम हैं, सभी विपुल ऋद्धि-शाली हैं॥७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब्बे दसबलूपेता, वेसारज्जेहुपागता।
सब्बे ते पटिजानन्ति, आसभट्ठानमुत्तमं ॥८॥

सीहनादं नदन्तेते, परिसासु विसारदा।
ब्रह्मचक्कं पवत्तेन्ति, लोके अप्पटिवत्तियं ॥९॥

उपेता बुद्ध-धम्मेहि, अट्ठारसहि नायका।
बत्तिंस - लक्खणूपेता, सीतानुब्यञ्जना धरा ॥१०॥

ब्यामप्पभाय सुप्पभा, सब्बे ते मुनि - कुञ्जरा।
बुद्धा सब्बञ्ञुनो एते, सब्बे खीणासवा जिना ॥११॥

महापभा महातेजा, महापञ्ञा महब्बला।
महाकारुणिका धीरा, सब्बेसानं सुखावहा ॥१२॥

दीपा नाथा पतिट्ठा च, ताणा लेणा च पाणिनं।
गती बन्धू महेस्सासा, सरणा च हितेसिनो ॥१३॥

सदेवकस्स लोकस्स, सब्बे एते परायणा।
तेसाहं सिरसा पादे, वन्दामि पुरिसुत्तमे ॥१४॥

वचसा मनसा चेव, वन्दामेते तथागते।
सयने आसने ठाने, गमने चापि सब्बदा ॥१५॥

सदा सुखेन रक्खन्तु, बुद्धा सन्तिकरा तुवं।
तेहि त्वं रक्खितो सन्तो, मुत्तो सब्बभयेहि च ॥१६॥

सब्बरोगा विनीमुत्तो, सब्बसन्ताप-वज्जितो।
सब्बवेरमतिक्कन्तो, निब्बुतो च तुवं भव ॥१७॥

तेसं सच्चेन सीलेन, खन्ति-मेत्ता-बलेन च।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च ॥१८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी बुद्ध दस-बलशाली होते हैं, सभी वैशारद्यप्राप्त भयमुक्त होते हैं, वे सभी परमार्थभ याने परमोत्तम स्थान को प्राप्त स्वीकार करते है ॥८॥

ये सभी सिंहनाद सदृश देशना द्वारा संपूर्ण परिषद को निर्भय कर देते हैं और ऐसे ब्रह्मचक्र (धर्मचक्र) का प्रवर्तन करते हैं, जिसका कि समस्त लोक में कोई भी प्राणी उल्टा प्रवर्तन नहीं कर सकता ॥९॥

ये सभी लोकनायक अट्ठारह बुद्ध-गुण-धर्मों से युक्त हैं, महापुरुषों के बत्तीस प्रमुख लक्षणों और अस्सी अनुव्यंजनों को धारण करने वाले हैं ॥१०॥

ये सभी मुनि श्रेष्ठ व्यामप्रभा से प्रभान्वित होते हैं। ये सभी बुद्ध सर्वज्ञ होते हैं और क्षीण-आस्रव (जन) होते हैं ॥११॥

ये बुद्ध महाप्रभावान, महातेजस्वी, महाप्रज्ञावान, महाबलशाली, महाकारुणिक, पंडित और सभी प्राणियों के लिए सुख लानेवाले हैं ॥१२॥

ये सभी बुद्ध, डूबते हुये के लिए द्वीप, अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार, त्राणरहितों के त्राण, निरालयों के आलय, अगतिवानों की गति, बंधुहीनों के बंधु, निराश लोगों की आशा, अशरणों की शरण और सब के हितैषी हैं ॥१३॥

इस प्रकार देवताओं सहित समस्त लोकों के शरणदायक (आधार) परम पुरुषोत्तम बुद्धों के चरणों में नत-मस्तक होकर मैं वंदना करता हूं!!१४॥

सोते, बैठते, खड़े और चलते, सभी समय ऐसे तथागत बुद्धों की मैं मन और वचन से वंदना करता हूं!!१५॥

ये शांतिदायक तुम्हें सदा सुखी रखें, तुम्हारी सदैव रक्षा करें! (इस प्रकार) उनके द्वारा रक्षित होकर तुम सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाओ!!१६॥

सब प्रकार के रोग, संताप और वैरों से विमुक्त होकर तुम परम सुख और शांति प्राप्त करो!!१७॥

वे बुद्ध अपने सत्य, शील, क्षांति (क्षमा) और मैत्री के बल से, तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!१८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरत्थिमस्मिं दिसाभागे, सन्ति भूता महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥१९॥

दक्खिणस्मिं दिसाभागे, सन्ति देवा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥२०॥

पच्छिमस्मिं दिसाभागे, सन्ति नागा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥२१॥

उत्तरस्मिं दिसाभागे, सन्ति यक्खा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥२२॥

पुरत्थिमेन धतरट्ठो, दक्खिणेन विरूळ्हको।
पच्छिमेन विरूपक्खो, कुवेरो उत्तरं दिसं॥२३॥

चत्तारो ते महाराजा, लोकपाला यसस्सिनो।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥२४॥

आकासट्ठा च भूमट्ठा, देवा नागा महिद्धिका।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥२५॥

इद्धिमन्तो च ये देवा, वसन्ता इध सासने।
तेपि त्वं अनुरक्खन्तु, अरोगेन सुखेन च॥२६॥

सब्बीतियो विवज्जन्तु, सोको रोगो विनस्सतु।
मा ते भवन्त्वन्तरायो, सुखी दीघायुको भव॥२७॥

अभिवादन-सीलिस्स, निच्चं वुद्धापचायिनो।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं॥२८॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्व दिशावासी महान ऋद्धिशाली (गंधर्व) प्राणी हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!१९॥

दक्षिण दिशावासी महान ऋद्धिशाली (कुम्भण्ड) देव हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!२०॥

पश्चिम दिशावासी महान ऋद्धिशाली (नाग) देव हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!२१॥

उत्तर दिशावासी महान ऋद्धिशाली (यक्ष) देव हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!२२॥

पूर्व दिशा में धृतराष्ट्र हैं, दक्षिण दिशा में विरूढ़क हैं, पश्चिम दिशा में विरूपाक्ष हैं, उत्तर दिशा में कुवेर हैं॥२३॥

ये चातुर्महाराजिक यशस्वी लोकपाल देवता हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!२४॥

धरती और आकाश पर रहने वाले सभी महान ऋद्धिशाली देव और नाग हैं, वे तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!२५॥

वर्तमान (बुद्ध) शासन में रहने वाले जो सभी ऋद्धिमान देव हैं वे भी तुम्हारी रक्षा करें! निरोग और सुखी रखें!!२६॥

तुम्हारे सब उपद्रव दूर हों! शोक और रोग विनष्ट हों! कोई अंतराय (विघ्न) न रहे! तुम सुखी रहो! दीर्घायु होओ!!२७॥

जो अभिवादनशील है, सदा वृद्धों की सेवा करने वाला है, उसके चारों धर्म (संपदाएं) – आयु, वर्ण, सुख और बल बढ़ते हैं॥२८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१. बोज्झङ्गसुत्त

संसारे संसरन्तानं, सब्बदुक्खविनासके।
सत्तधम्मे च बोज्झङ्गे, मारसेनपमद्दने॥

बुज्झित्वा ये चिमे सत्ता, तिभवा मुत्तकुत्तमा।
अजातिमजराब्याधिं, अमतं निब्भयं गता॥

एवमादि गुणूपेतं, अनेकगुणसङ्गहं।
ओसधञ्च इमं मन्तं, बोज्झङ्गञ्च भणामहे॥

बोज्झङ्गो सतिसङ्खातो,
धम्मानं-विचयो तथा।
वीरियं पीति पस्सद्धि,
बोज्झङ्गा च तथा परे॥१॥

समाधुपेक्खा बोज्झङ्गा,
सत्तेते सब्बदस्सिना।
मुनिना सम्मदक्खाता,
भाविता बहुलीकता॥२॥

संवत्तन्ति अभिञ्ञाय,
निब्बाणाय च बोधिया।
एतेन सच्चवज्जेन,
सोत्थि ते होतु सब्बदा॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१. बोध्यंग-सुत्त

(भव) संसार में संसरण करने वाले प्राणियों के सब दुःखों का विनाश करने वाले और मार की सेना का मर्दन करने वाले, इन सात बोध्यंगों को जिन श्रेष्ठ प्राणियों ने (स्वयं अनुभव से) जान कर, इसी बीच तीनों लोकों से मुक्त हो, जन्म बुढ़ापा और रोग से रहित हो निर्भय अमृत (निर्वाण) की प्राप्ति कर ली है।

ऐसे गुणों से युक्त अनेक गुणों के संग्रह-स्वरूप औषधि सदृश इस बोध्यंग सुत्त मंत्र को कह रहे हैं–

बोधि का अंग कहलाने वाले ये सात बोध्यंग हैं–
स्मृति, धर्म-विचय, वीर्य, प्रीति, प्रश्रब्धि, समाधि और उपेक्षा;
जिन्हें सर्वदर्शी मुनि (भगवान बुद्ध) ने स्वयं भावित तथा बहुलीकृत किया और भली प्रकार बतलाया॥१-२॥

वे अभिज्ञा, निर्वाण और बोधि को प्राप्त कराने वाले हैं। इस सत्य-वचन से सदा तेरा कल्याण हो॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकस्मिं समये नाथो,
मोग्गलानञ्च कस्सपं।
गिलाने दुक्खिते दिस्वा,
बोज्झङ्गे सत्त देसयी॥४॥

ते च तं अभिनन्दित्वा,
रोगा मुच्चिंसु तङ्खणे।
एतेन सच्चवज्जेन,
सोत्थि ते होतु सब्बदा॥५॥

एकदा धम्मराजापि,
गेलञ्ञेनाभिपीलितो।
चुन्दत्थेरेन तं येव,
भणापेत्वान सादरं॥६॥

सम्मोदित्वान आबाधा,
तम्हा वुट्ठासि टानसो।
एतेन सच्चवज्जेन,
सोत्थि ते होतु सब्बदा॥७॥

पहीना ते च आबाधा,
तिण्णन्नम्पि महेसिनं।
मग्गाहता किलेसाव,
पत्तानुपत्तिधम्मतं।
एतेन सच्चवज्जेन,
सोत्थि ते होतु सब्बदा॥८॥

– श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान बुद्ध ने एक समय मौद्गल्यायन और काश्यप को रोगी और दुःखी देखकर सात बोध्यंगों का उपदेश दिया था॥४॥

वे उनका अभिनंदन कर उसी क्षण रोग से मुक्त हो गये। इस सत्य वचन से सदा तेरा कल्याण हो!!५॥

एक समय धर्मराजा (बुद्ध) भी रोग से पीड़ित हो, चुन्द स्थविर से उसे ही आदरपूर्वक कहला कर:

आनंदित होकर उस रोग से एकदम उठ खड़े हुए थे। इस सत्य वचन से सदा तेरा कल्याण हो!!६-७॥

तीनों महर्षियों के वे रोग दूर हो गये, लोकोत्तर मार्ग पर चलने से उनके क्लेश समाप्त हुये और उन क्लेशों ने पुनः न उत्पन्न होने की धर्मता पायी। इस सत्यवचन से तेरा सदा कल्याण हो॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२२. नरसीह-गाथा

चक्कवरङ्कितरत्त-सुपादो,
लक्खणमण्डितआयतपण्हि।
चामरछत्तविभूसितपादो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥१॥

सब्बकुमारवरो सुखुमालो,
लक्खणचित्तिकपुण्णसरीरो।
लोकहिताय गतो नरवीरो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥२॥

पुण्णससङ्कनिभो मुखवण्णो,
देवनरान पियो नरनागो।
मत्तगजिन्दविलासितगामी,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥३॥

खत्तियसम्भवअग्गकुलीनो,
देवमनुस्सनमस्सितपादो।
सीलसमाधिपतिट्ठितचित्तो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२२. नरसिंह-गाथा

[जब अपने पिता राजा शुद्धोधन के आग्रह पर भगवान बुद्ध कपिलवस्तु पधारे थे, उस समय राहुल-माता ने राहुल को इन्हीं शब्दों में तथागत का परिचय दिया था–]

जिनके रक्तवर्ण चरण चक्र से अलंकृत हैं, जिनकी लंबी एड़ी शुभ लक्षण वाली है, जिनके चरण पर चंवर तथा छत्र अंकित हैं, जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥१॥

जो कुमार श्रेष्ठ शाक्य सुकुमार हैं, जिनका संपूर्ण शरीर सुंदर लक्षणों से चित्रित है, नरों में वीर, जिन्होंने लोक-हित के लिए गृह-त्याग किया है; जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥२॥

जिनका मुख पूर्ण चंद्र के समान प्रकाशित है, जो नरों में हाथी के समान हैं तथा सभी देवाताओं और नरों के प्रिय हैं, जिनकी चाल मस्त गजेंद्र की सी है; जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥३॥

जो अग्र क्षत्रिय कुलोत्पन्न हैं, जिनके चरणों की सभी देव और मनुष्य वंदना करते हैं, जिनका चित्त शील-समाधि में सुप्रतिष्ठित है; जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयतयुत्तसुसण्ठितनासो,
गोपखुमो अभिनीलसुनेत्तो।
इन्दधनुअभिनीलभमूको,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥५॥

वट्टसुवट्ट-सुसण्ठित-गीवो,
सीहहनु मिगराजसरीरो।
कञ्चनसुच्छवि उत्तमवण्णो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥६॥

सिनिद्धसुगम्भीरमञ्जुसुघोसो,
हिङ्गुलवद्ध-सुरत्तसुजिव्हो।
वीसति वीसति सेतसुदन्तो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥७॥

अञ्जनवण्णसुनीलसुकेसो,
कञ्चनपट्टविसुद्धनलाटो।
ओसधिपण्डरसुद्धसुउण्णो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥८॥

गच्छति नीलपथे विय चन्दो,
तारगणापरिवेठितरूपो।
सावकमज्झागतो समणिन्दो,
एस हि तुय्ह पिता नरसीहो॥९॥

– सारत्थ. टी. ३.२२१-२२३, राहुलवत्थुकथावण्णना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिनकी नासिका चौड़ी तथा सुडौल है, बछिया की सी जिनकी वरौनियाँ हैं, जिनके नेत्र सुनील वर्ण हैं, जिनकी भौंहें इन्द्र धनुष के समान हैं, जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥५॥

जिनकी ग्रीवा गोलाकार है, सुगठित है, जिनकी ठोड़ी सिंह के समान है तथा जिनका शरीर मृगराज के समान है, जिनका वर्ण सुवर्ण के समान उत्तम है; जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥६॥

जिनकी वाणी स्निग्ध, गंभीर, सुंदर है; जिनकी जिह्वा सिंदूर के समान रक्त-वर्ण है, जिनके मुँह में श्वेत वर्ण के बीस-बीस दांत हैं; जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥७॥

जिनके केश सुरमे के समान नीलवर्ण हैं, जिनका ललाट स्वर्ण के समान विशुद्ध है, जिनके भौंहों के बीच के बाल औषधि तारे के समान हल्का पीला है, जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥८॥

जो आकाश में चन्द्रमा की भांति बढ़े जा रहे हैं, जो (श्रमणेन्द्र) अपने श्रावकों से उसी प्रकार घिरे हुए हैं जैसे चंद्रमा तारों से, जो नरों में सिंह हैं, यही तेरे पिता हैं॥९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२३. पुब्बण्हसुत्त

यं दुन्निमित्तं अवमङ्गलञ्च, यो चामनापो सकुणस्स सद्दो।
पापग्गहो दुस्सुपिनं अकन्तं, बुद्धानुभावेन विनासमेन्तु ॥१॥

यं दुन्निमित्तं अवमङ्गलञ्च, यो चामनापो सकुणस्स सद्दो।
पापग्गहो दुस्सुपिनं अकन्तं, धम्मानुभावेन विनासमेन्तु ॥२॥

यं दुन्निमित्तं अवमङ्गलञ्च, यो चामनापो सकुणस्स सद्दो।
पापग्गहो दुस्सुपिनं अकन्तं, सङ्घानुभावेन विनासमेन्तु ॥३॥

दुक्खप्पत्ता च निदुक्खा, भयप्पत्ता च निब्भया।
सोकप्पत्ता च निस्सोका, होन्तु सब्बेपि पाणिनो ॥४॥

एत्तावता च अम्हेहि, सम्भतं पुञ्ञसम्पदं।
सब्बे देवानुमोदन्तु, सब्बसम्पत्ति सिद्धिया ॥५॥

दानं ददन्तु सद्धाय, सीलं रक्खन्तु सब्बदा।
भावनाभिरता होन्तु, गच्छन्तु देवतागता ॥६॥

सब्बे बुद्धा बलप्पत्ता, पच्चेकानञ्च यं बलं।
अरहन्तानञ्च तेजेन, रक्खं बन्धामि सब्बसो ॥७॥

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं अत्थि तथागतेन, इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु ॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२३. पूर्वाह्न-सुत्त

ये जो अमंगल चिह्न हैं, पक्षियों के अप्रिय शब्द हैं, पाप-ग्रह हैं, अप्रिय दुःस्वप्न हैं – ये सारे अशुभ निमित्त (भगवान) बुद्ध के प्रताप से विनष्ट हों!!१॥

ये जो अमंगल चिह्न हैं, पक्षियों के अप्रिय शब्द हैं, पाप-ग्रह हैं, अप्रिय दुःस्वप्न हैं – ये सारे अशुभ निमित्त धर्म के प्रताप से विनष्ट हों!!२॥

ये जो अमंगल चिह्न हैं, पक्षियों के अप्रिय शब्द हैं, पाप-ग्रह हैं, अप्रिय दुःस्वप्न हैं – ये सारे अशुभ निमित्त संघ के प्रताप से विनष्ट हों!!३॥

सभी दुःख-ग्रस्त प्राणी दुःख-मुक्त हों, भय-ग्रस्त भय-मुक्त हों, शोक-ग्रस्त शोक-मुक्त हों॥४॥

यह जो हमने इतनी पुण्य संपदा अर्जित की है, इसके पुण्य-दान का सभी देवगण पुण्यानुमोदन करें, जिससे कि हमें सब प्रकार की सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति हो!!५॥

श्रद्धापूर्वक दान दें, सर्वदा शील का पालन करें, (शमथ और विपश्यना) भावना में रत रहें और देवगति प्राप्त करें!!६॥

सभी बलप्राप्त सम्यक सम्बुद्धों के और प्रत्येक बुद्धों के बल से एवं अरहन्तों के तेज से मैं सब तरह से रक्षा (सूत्र) बांधता हूं॥७॥

इस लोक में अथवा अन्य लोकों में जो भी धन-सम्पत्ति है और स्वर्गों में जो भी अमूल्य रत्न हैं, उनमें से कोई भी तथागत के समान श्रेष्ठ नहीं है। सचमुच बुद्ध में यही श्रेष्ठ रत्न है! इस सत्य से कल्याण हो!!८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं, अत्थि तथागतेन, इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥९॥

यं किञ्चि वित्तं, इध वा हुरं वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं, अत्थि तथागतेन, इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥१०॥

भवतु सब्बमङ्गलं, रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बबुद्धानुभावेन, सदा सुखी भवन्तु ते॥११॥

भवतु सब्बमङ्गलं, रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बधम्मानुभावेन, सदा सुखी भवन्तु ते॥१२॥

भवतु सब्बमङ्गलं, रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बसङ्घानुभावेन, सदा सुखी भवन्तु ते॥१३॥

महाकारुणिको नाथो, हिताय सब्बपाणिनं।
पूरेत्वा पारमी सब्बा, पत्तो सम्बोधिमुत्तमं।
एतेन सच्चवज्जेन, सोत्थि ते होतु सब्बदा॥१४॥

जयन्तो बोधिया मूले, सक्यानं नन्दिवड्ढनो।
एवमेव जयो होतु, जयस्सु जय मङ्गलं॥१५॥

अपराजितपल्लङ्के, सीसे पुथुविपुक्खले।
अभिसेके सब्बबुद्धानं, अग्गप्पत्तो पमोदति॥१६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस लोक में अथवा अन्य लोकों में जो भी धन-सम्पत्ति है और स्वर्गों में जो भी अमूल्य रत्न हैं, उनमें से कोई भी तथागत के समान श्रेष्ठ नहीं है। सचमुच धर्म में यही श्रेष्ठ रत्न है! इस सत्य से कल्याण हो!!९॥

इस लोक में अथवा अन्य लोकों में जो भी धन-सम्पत्ति है और स्वर्गों में जो भी अमूल्य रत्न हैं, उनमें से कोई भी तथागत के समान श्रेष्ठ नहीं है। सचमुच सङ्घ में यही श्रेष्ठ रत्न है! इस सत्य से कल्याण हो!!१०॥

सब प्रकार से तुम्हारा मंगल हो! सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें! सभी बुद्धों के प्रताप से तुम सदैव सुखी रहो!! ११॥

सब प्रकार से तुम्हारा मंगल हो! सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें! सभी धर्मों के प्रताप से तुम सदैव सुखी रहो!!१२॥

सब प्रकार से तुम्हारा मंगल हो! सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें! सभी सङ्घों के प्रताप से तुम सदैव सुखी रहो!!१३॥

महाकारुणिक भगवान ने सब प्राणियों के हित-सुख के लिए समस्त पारमिताओं को परिपूर्ण कर उत्तम सम्बोधि प्राप्त की। इस सत्य वचन से तुम्हारा सदा कल्याण हो!!१४॥

शाक्यों के आनंदवर्धक भगवान गौतम ने बोधि-वृक्ष के तले जिस प्रकार दुष्ट मार पर विजय प्राप्त की, उसी प्रकार तुम्हारी भी जय हो, निश्चित रूप से तुम जय-मंगल लाभी बनो!!१५॥

समस्त बुद्धों के बुद्धाभिषेक हेतु विपुल शोभनीय अपराजित बोधि-पल्लंक (बुद्ध-आसन) पर सम्यक सम्बोधि प्राप्त करते हुए जैसे सभी भगवान प्रमुदित हुए वैसे ही तुम भी अपनी मनोकामनाएं पूर्ण कर प्रसन्नता प्राप्त करो!!१६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनक्खत्तं सुमङ्गलं, सुप्पभातं सुहुट्ठितं।
सुखणो सुमुहुत्तो च, सुयिट्ठं ब्रह्मचारिसु॥१७॥

पदक्खिणं कायकम्मं, वाचाकम्मं पदक्खिणं।
पदक्खिणं मनोकम्मं, पणीधि ते पदक्खिणं॥१८॥

पदक्खिणानि कत्वान, लभन्तत्थे पदक्खिणे।
ते अत्थलद्धा सुखिता, विरुळ्हा बुद्धसासने।
अरोगा सुखिता होथ, सह सब्बेहि ञातिभि॥१९॥

– श्रामणेर-विनय

– खु. पा. ६.५, रतनसुत्तं

– अ. नि. १.३.३३२, पुब्बण्हसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारे लिए नक्षत्र शुभ हो, घड़ी सुमंगल हो, प्रभात शुभ हो, सम्यक जागरण शुभ हो, क्षण शुभ हो, मुहूर्त शुभ हो और ब्रह्मचारियों के प्रति दी गयी आहुति शुभ हो!!१७॥

तुम्हारे कायिक-कर्म शुभ हों, वाचिक-कर्म शुभ हों, मानसिक-कर्म शुभ हों, तुम्हारी आकांक्षाएं शुभ हों!!१८॥

शुभ कर्म कर, यहाँ कल्याण प्राप्त कर। वे लक्ष्य (निर्वाण) प्राप्त कर सुखी होते थे और बुद्धशासन में प्रगति करते थे। तुम भी सभी बंधु-बांधवों सहित आरोग्य और सुख प्राप्त करो॥१९॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२४. मङ्गल-कामना

सासनस्स च लोकस्स,
वुड्ढि भवतु सब्बदा।
सासनम्पि च लोकं च,
देवा रक्खन्तु सब्बदा॥१॥

सद्धिं होन्तु सुखी सब्बे,
परिवारेहि अत्तनो।
अनीघा सुमना होन्तु,
सह सब्बेहि ञातिभि॥२॥

राजतो वा चोरतो वा, मनुस्सतो वा अमनुस्सतो वा,
अग्गितो वा उदकतो वा, पिसाचतो वा खाणुकतो वा,
कण्टकतो वा नक्खत्ततो वा, जनपदरोगतो वा
असद्धम्मतो वा, असन्दिट्ठतो वा असप्पुरिसतो वा,
चण्डहत्थि-अस्स-मिग-गोण-कुक्कर-अहि-विच्छिक-
मणिसप्प-दीपि-अच्छ-तरच्छ-सूकर-महि-यक्ख-
रक्खसादीहि, नाना भयतो वा, नाना रोगतो वा,
नाना उपद्दवतो वा आरक्खं गण्हन्तु॥३॥

यं पत्तं कुसलं तस्स, आनुभावेन पाणिनो।
सब्बे सद्धम्मराजस्स, ञत्वा धम्मं सुखावहं॥४॥

पापुणन्तु विसुद्धाय, सुखाय पटिपत्तिया।
असोकं अनुपायासं, निब्बानं सुखमुत्तमं॥५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२४. मंगल-कामना

शासन (धर्म) और लोक की सदा वृद्धि हो। शासन (धर्म) और लोक की देवता सदा रक्षा करें॥१॥

सब अपने परिवार और जाति-कुल सहित सुखी, दुःख रहित और प्रसन्न हों॥२॥

राजा, चोर, मनुष्य, अमनुष्य, अग्नि, जल, पिशाच, खूंटा, कांटा, नक्षत्र, संक्रामक रोग, असद्धर्म (पाप), दुश्मन, दुर्जन अथवा प्रचंड हाथी, घोड़ा, मृग, सांड़, कुत्ता, सांप, विच्छू, मणिधर भुजंग, वाघ, भालू, लकड़बग्घा, सूकर, भैंसा, यक्ष, राक्षस आदि से होने वाले नाना प्रकार के भय, रोग, तथा उपद्रवों से सुरक्षित हों॥३॥

सद्धर्मराजा के जिस सुख लाने वाले धर्म को जान कर कुशल धर्म प्राप्त किया उस धर्म के प्रताप से सभी प्राणी विशुद्धि के लिए, सुख के लिए धर्म मार्ग पर आरूढ़ हों, शोक रहित, दुःख रहित श्रेष्ठ सुख निर्वाण को प्राप्त करें॥४-५॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो,
धम्मे होन्तु सगारवा।
सब्बेपि सत्ता कालेन,
सम्मा देवो पवस्सतु॥६॥

यथा रक्खिंसु पोराणा,
सुराजानो तथेविमं।
राजा रक्खतु धम्मेन,
अत्तनो व पजं पजं॥७॥

देवो वस्सतु कालेन,
सस्स-सम्पत्तिहेतु च।
फीतो भवतु लोको च,
राजा भवतु धम्मिको॥८॥

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु,
सब्बे होन्तु च खेमिनो।
सब्बे भद्राणि पस्सन्तु,
मा कञ्चि दुक्खमागमा॥९॥

इमिना पुञ्ञकम्मेन,
मा मे बालसमागमो।
सन्तं समागमो होतु,
याव निब्बानपत्तिया॥१०॥ — श्रामणेर-विनय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सद्धर्म चिरस्थायी हो। सभी प्राणी धर्म का गौरव करें। पर्जन्य (वादल) समय पर जल वरसावें॥६॥

जिस प्रकार प्राचीन काल के अच्छे राजाओं ने रक्षा की, उसी प्रकार (हमारा) राजा भी अपनी संतान सदृश प्रजा की धर्मपूर्वक रक्षा करे॥७॥

अच्छी फसल के लिए पर्जन्य देव (वादल) समय पर पानी वरसायें। लोग समृद्धिशाली हों। देश का राजा धार्मिक हो॥८॥

सभी प्राणी सुखी हों। सभी कुशल-क्षेम युक्त हों। सभी शुभ देखें। किसी को भी कोई दुःख प्राप्त न हो॥९॥

इस पुण्य कर्म के प्रभाव से मूर्खों से मेरी संगति न हो। जव तक निर्वाण न प्राप्त कर लूं, सदा सत्पुरुषों से ही मिलन हो॥१०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५. मङ्गल-आसिंसना

आयु आरोग्य-सम्पत्ति,
सग्गसम्पत्तिमेव च।
ततो निब्बानसम्पत्ति,
इमिना ते समिज्झतु॥१॥

इच्छितं पत्थितं तुय्हं,
खिप्पमेव समिज्झतु।
सब्बे पूरेन्तु सङ्कप्पा,
चन्दो पन्नरसो यथा॥२॥

२६. पुञ्ञानुमोदन

सब्बेसु चक्कवाळेसु,
यक्खा देवा च ब्रह्मुनो।
यं अम्हेहि कतं पुञ्ञं,
सब्बसम्पत्ति साधकं॥१॥

सब्बे तं अनुमोदित्वा,
समग्गा सासने रता।
पमादरहिता होन्तु,
आरक्खासु विसेसतो॥२॥

पुञ्ञभागमिदं चञ्ञं, समं ददाम कारितं।
अनुमोदन्तु तं सब्बे, मेदिनी ठातु सक्खिके॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५. मंगल-आशीष

तुम्हें दीर्घायु-संपत्ति प्राप्त हो, आरोग्य-संपत्ति प्राप्त हो, स्वर्ग-संपत्ति प्राप्त हो और निर्वाण-संपत्ति प्राप्त हो॥१॥

सभी इच्छित और प्रार्थित वस्तुएं तुम्हें शीघ्र प्राप्त हों। तुम्हारे सभी संकल्प पूर्णिमा के चांद की तरह परिपूर्ण हों॥२॥

२६. पुण्य-अनुमोदन

सभी चक्रवालों के यक्ष देव और ब्रह्मा हमारे द्वारा किये गये सर्वसंपत्ति साधक पुण्य का अनुमोदन करें॥१॥

और वे समग्र रूप में शासन में रत हो विशेष कर बुद्ध शासन की रक्षा में प्रमादरहित होवें॥२॥

इस परित्राण पाठ से अर्जित पुण्य को तथा अन्य पुण्यों को भी हम समान रूप से वितरित करते हैं। सभी (यक्ष, देव और ब्रह्मा) इसका अनुमोदन करें और पृथ्वी साक्षी रहे॥३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२७. धम्म-संवेग

'सब्बे सङ्खारा अनिच्चा'ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥१॥

'सब्बे सङ्खारा दुक्खा'ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥२॥

'सब्बे धम्मा अनत्ता'ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥३॥

अप्पमादेन, भिक्खवे, सम्पादेथ।
बुद्धुप्पादो दुल्लभो लोकस्मिं, मनुस्सभावो दुल्लभो,
दुल्लभा सद्धासम्पत्ति, पब्बजितभावो दुल्लभो,
सद्धम्मस्सवनं अति दुल्लभं,
एवं दिवसे दिवसे ओवदति॥४॥

हन्ददानि, भिक्खवे, आमन्तयामि वो।
वयधम्मा सङ्खारा, अप्पमादेन सम्पादेथ॥५॥

अनिच्चा वत सङ्खारा, उप्पादवयधम्मिनो।
उपज्जित्वा निरुज्झन्ति, तेसं वूपसमो सुखो॥६॥

– ध. प. २७७-२७९, मग्गवग्गो
– दी. नि. २.९२,११७, महापरिनिब्बानसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२७. धर्म-संवेग

सभी संस्कृत (वनी हुई) चीजें अनित्य हैं; जब कोई प्रज्ञा से यह देख लेता है, तो सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है। ऐसा है यह चित्त विशुद्धि का मार्ग॥१॥

सभी संस्कृत (वनी हुई) चीजें दुःख हैं; जब कोई प्रज्ञा से यह देख लेता है, तो सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है। ऐसा है यह चित्त विशुद्धि का मार्ग॥२॥

सभी धर्म अनात्म हैं; जब कोई प्रज्ञा से यह देख लेता है, तो सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है। ऐसा है यह चित्त विशुद्धि का मार्ग॥३॥

हे भिक्षुओ! विना प्रमाद के कुशल-सम्पादन करो। लोक में बुद्ध का उत्पन्न होना दुर्लभ है। मनुष्य का जीवन दुर्लभ है। श्रद्धा-संपत्ति दुर्लभ है। प्रव्रजित होना दुर्लभ है। सद्धर्म-श्रवण अति दुर्लभ है। इस प्रकार प्रतिदिन उपदेश दिया जाता है॥४॥

अच्छा भिक्षुओ! आओ! मैं तुम्हे आमन्त्रित करता हूं। सभी संस्कार व्यय-धर्मा हैं, नाशवान हैं, प्रमादरहित होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करो॥५॥

सचमुच! सारे संस्कार अनित्य ही तो हैं। उत्पन्न होने वाली सभी स्थितियां, वस्तु, व्यक्ति अनित्य ही तो हैं। उत्पन्न होना और नष्ट हो जाना, यह तो इनका धर्म ही है, स्वभाव ही है। विपश्यना साधना के अभ्यास द्वारा उत्पन्न हो कर निरुद्ध होने वाले इस प्रपंच का जब पूर्णतया उपशमन हो जाता है – पुनः उत्पन्न होने का क्रम समाप्त हो जाता है, उसी का नाम परम सुख है, वही निर्वाण-सुख है॥६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८. पकिण्णक

सब्बपापस्स अकरणं,
कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं,
एतं बुद्धान सासनं॥१॥

मनोपुब्बङ्गमा धम्मा,
मनोसेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पदुट्ठेन,
भासति वा करोति वा।
ततो नं दुक्खमन्वेति,
चक्कं'व वहतो पदं॥२॥

मनोपुब्बङ्गमा धम्मा,
मनोसेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पसन्नेन,
भासति वा करोति वा।
ततो नं सुखमन्वेति,
छाया'व अनपायिनी॥३॥

तुम्हेहि किच्चं आतप्पं,
अक्खातारो तथागता।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति,
झायिनो मारबन्धना॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८. प्रकीर्णक

सभी प्रकार के पापों को न करना, कुशल (पुण्य) कार्यों का संपादन करना, अपने चित्त को परिशुद्ध करना, यह है सभी बुद्धों की शिक्षा ॥१॥

सभी धर्म (अवस्थाएं) पहले मन में उत्पन्न होते हैं। मन ही मुख्य है, ये धर्म मनोमय हैं। जब मनुष्य मलिन मन से बोलता या कार्य करता है, तो दुःख उसके पीछे ऐसे ही हो लेता है, जैसे गाड़ी के पहिये बैल के पैरों के पीछे-पीछे ॥२॥

सभी धर्म (अवस्थाएं) पहले मन में उत्पन्न होते हैं। मन ही मुख्य है, ये धर्म मनोमय हैं। जब मनुष्य स्वच्छ मन से बोलता है या कार्य करता है, तो सुख उसके पीछे ऐसे ही हो लेता है, जैसे कभी साथ न छोड़ने वाली छाया ॥३॥

सभी तथागत बुद्ध केवल मार्ग आख्यात कर देते हैं; विधि सिखा देते हैं, अभ्यास और प्रयत्न तो तुम्हें ही करना है। जो स्वयं मार्ग पर आरूढ़ होते हैं, ध्यान में रत होते हैं, वे मार के याने मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाते हैं ॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्ता हि अत्तनो नाथो,
अत्ता हि अत्तनो गति।
तस्मा संयममत्तानं,
अस्सं भद्रंव वाणिजो॥५॥

चक्खुना संवरो साधु, साधु सोतेन संवरो।
घाणेन संवरो साधु, साधु जिह्वाय संवरो।
कायेन संवरो साधु, साधु वाचाय संवरो।
मनसा संवरो साधु, साधु सब्बत्थ संवरो।
सब्बत्थ संवुतो भिक्खु, सब्बदुक्खा पमुच्चति॥६॥

यतो यतो सम्मसति,
खन्धानं उदयब्बयं।
लभती पीति पामोज्जं,
अमतं तं विजानतं॥७॥

सब्बो पज्जलितो लोको,
सब्बो लोको पकम्पितो॥८॥
– ध. प. १-२, १८३, २७६, ३६०-३६१, ३७४, ३८०
– सं. नि. १.१.१५७, उपचालासुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम स्वयं ही अपना स्वामी हो, आप ही स्वयं गति हो!
(अपनी अच्छी या बुरी गति के तुम स्वयं ही तो जिम्मेदार
हो!) इसलिए स्वयं को वश में रखो; वैसे ही, जैसे
कि घोड़ों का कुशल व्यापारी श्रेष्ट घोड़ों को पालतू बना
कर वश में रखता है, संयत रखता है॥५॥

आंख का संवर (संयम) भला है, भला है कान का संवर।
नाक का संवर भला है, भला है जीभ का संवर।
शरीर का संवर भला है, भला है वाणी का संवर।
मन का संवर भला है, भला है सर्वत्र संवर।
(मन और काया स्कंध में) सर्वत्र संवर रखने वाला
भिक्षु (साधक) सब दुःखों से मुक्त हो जाता है॥६॥

साधक सम्यक सावधानता के साथ जब- जब शरीर और
चित्त स्कंधों के उदय-व्यय रूपी अनित्यता की
विपश्यनानुभूति करता है, तब- तब प्रीति प्रमोद रूपी
अंतःसुख (आध्यात्मिक सुख) की प्राप्ति करता है। पंडितों
(जानने वालों) के लिए वह अमृत है॥७॥

सारे लोक प्रज्वलित ही प्रज्वलित हैं।
सारे लोक प्रकंपित ही प्रकंपित हैं॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२९. खन्धपरित्त

सब्बासीविसजातीनं दिब्बमन्तागद विय।
यं नासेति विसं घोरं, सेसञ्चापि परिस्सयं॥

आणाखेत्तम्हि सब्बत्थ, सब्बदा सब्बपाणिनं।
सब्बसोपि विनासेति परित्तं तं भणामहे॥

एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तेन खो पन समयेन सावत्थियं अञ्ञतरो भिक्खु अहिना दट्ठो कालङ्कतो होति। अथ खो सम्बहुला भिक्खु येन भगवा तेनपसङ्कमिंसु, उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। एकमन्तं निसिन्ना खो ते भिक्खू भगवन्तं एतदवोचुं – 'इध भन्ते! सावत्थियं अञ्ञतरो भिक्खु अहिना दट्ठो कालङ्कतोति।'

"नहि नून सो भिक्खवे! भिक्खु चत्तारि अहिराजकुलानि मेत्तेन चित्तेन फरि, सचे हि सो भिक्खवे! भिक्खु चत्तारि अहिराजकुलानि मेत्तेन चित्तेन फरेय्य, नहि सो भिक्खवे! भिक्खु अहिना दट्ठो कालङ्करेय्य। कतमानि चत्तारि अहिराजकुलानि? विरूपक्खं अहिराजकुलं, एरापथं अहिराजकुलं, छब्यापुत्तं अहिराजकुलं, कण्हागोतमकं अहिराजकुलं। नहि नून सो भिक्खवे! भिक्खु इमानि चत्तारि अहिराजकुलानि मेत्तेन चित्तेन फरि। सचे हि सो भिक्खवे! भिक्खु इमानि चत्तारि अहिराजकुलानि मेत्तेन चित्तेन फरेय्य नहि सो भिक्खवे! भिक्खु अहिना दट्ठो कालं करेय्य। अनुजानामि भिक्खवे! इमानि चतारि अहिराजकुलानि मेत्तेन चित्तेन फरितुं अत्तगुत्तिया, अत्तरक्खाय, अत्तपरित्तायाति।"

इदमवोच भगवा, इदं वत्वा सुगतो, अथापरं एतदवोच सत्था –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२९. खन्धपरित्त

सभी प्रकार की सर्प जातियों के विष के लिए जो दिव्य मंत्रौषधि के समान है, जो भयानक विष को नष्ट करता है, शेष खतरों को भी (दूर भगाता है), भगवान बुद्ध के आज्ञा-क्षेत्र (जहां तक बुद्ध शासन है) में सर्वत्र और सदा प्राणियों के सभी प्रकार के विषों को विनष्ट करता है, उस परित्राण को कह रहे हैं–

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवन- आराम में विहार कर रहे थे। उस समय श्रावस्ती में कोई भिक्षु सांप के डँसने से मर गया था। तब बहुत से भिक्षु जहां भगवान थे वहां गये, वहां जाकर भगवान को अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे उन भिक्षुओं ने भगवान से कहा–"भंते! यहां श्रावस्ती में कोई भिक्षु सांप के डँसने से मर गया है।"

"भिक्षुओ! उस भिक्षु ने निश्चय ही चार सर्प-कुलों के प्रति अपने चित्त को मैत्री-भावना से आप्लावित नहीं किया। यदि भिक्षुओ! वह भिक्षु चार सर्प-कुलों के प्रति अपने चित्त को मैत्री-भावना से आप्लावित करता तो भिक्षुओ! वह भिक्षु सांप के डँसने से नहीं मरता। कौन-से चार सर्प-कुल? विरूपाक्ष सर्प-कुल, ऐरापथ सर्प-कुल, छव्यापुत्र सर्प-कुल और कृष्णगौतम सर्प-कुल। भिक्षुओ! यदि वह भिक्षु इन चार सर्प-कुलों के प्रति अपने चित्त को मैत्री-भावना से आप्लावित किये होता तो भिक्षुओ! वह भिक्षु सांप के डँसने से नहीं मरता। भिक्षुओ! आज्ञा देता हूं अपनी गुप्ति, रक्षा और परित्राण के लिए इन चार सर्प-कुलों के प्रति अपने चित्त को मैत्री-भावना से आप्लावित करने की।"

भगवान ने यह कहा। सुगत ने ऐसा कह कर, फिर शास्ता ने ऐसा कहा–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विरूपक्खेहि मे मेत्तं, मेत्तं एरापथेहि मे।
छब्यापुत्तेहि मे मेत्तं, मेत्तं कण्हागोतमकेहि च॥१॥

अपादकेहि मे मेत्तं, मेत्तं द्विपादकेहि मे।
चतुप्पदेहि मे मेत्तं, मेत्तं बहुप्पदेहि मे॥२॥

मा मं अपादको हिंसि, मा मं हिंसि द्विपादको।
मा मं चतुप्पदो हिंसि, मा मं हिंसि बहुप्पदो॥३॥

सब्बे सत्ता सब्बे पाणा, सब्बे भूता च केवला।
सब्बे भद्रानि पस्सन्तु, मा किञ्चि पापमागमा॥४॥

अप्पमाणो बुद्धो, अप्पमाणो धम्मो, अप्पमाणो सङ्घो, पमाणवन्तानि सिरिंसपानि अहिविच्छिका सतपदी उण्णानाभि सरवू मूसिका, कता मे रक्खा, कता मे परित्ता, पटिक्कमन्तु भूतानि, सोहं नमो भगवतो नमो सत्तन्नं सम्मासम्बुद्धानन्ति।

– श्रामणेर-विनय

– अ. नि. १.४.८३-८५, अहिराजसुत्तं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विरूपाक्षों के प्रति मेरी मैत्री भावना है, ऐरापथों के प्रति भी मेरी मैत्री भावना है, छव्यापुत्रों के प्रति मेरी मैत्री भावना है और कृष्णगौतम के प्रति भी मेरी मैत्री भावना है॥१॥

विना पैर वालों के प्रति मेरी मैत्री भावना है, दो पैर वालों के प्रति भी मेरी मैत्री भावना है, चार पैर वालों के प्रति भी मेरी मैत्री भावना है और वहुत पैर वालों के प्रति भी मेरी मैत्री भावना है॥२॥

विना पैरवाला मेरी हिंसा न करे, दो पैरवाला भी मेरी हिंसा न करे। चार पैर वाला मेरी हिंसा न करे और वहुत पैरवाला भी मेरी हिंसा न करे॥३॥

सभी सत्त्व, सभी प्राणी और समस्त उत्पन्न जीव-जन्तु सभी कल्याणदर्शी हों (कुशल कर्म करने वाले हों) और उनमें लेशमात्र भी बुरे विचार न आवें।

वुद्ध धर्म और संघ अप्रामाण्य (प्रमाण रहित) हैं, किन्तु रेंगने वाले प्राणी, सांप, विच्छू, गोजर, मकड़ा (ऊर्णनाभ) छिपकली, चूहा –इनकी संख्या सीमित है। मैंने रक्षा कर ली, मैंने परित्राण कर लिया, सभी प्राणी पीछे हट जायं, लौट जायं। मैं भगवान को नमस्कार करता हूं। सातों सम्यक संवुद्धों को नमस्कार करता हूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विपश्यना साहित्य

हिंदी

- निर्मल धारा धर्म की - (पांच दिवसीय प्रवचन) रु. ५५/-
- प्रवचन सारांश (शिविर-प्रवचन) रु. ४५/-
- जागे पावन प्रेरणा रु. ८०/-
- जागे अंतर्बोध रु. ५०/-
- धर्म: आदर्श जीवन का आधार रु. ४०/-
- तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-२ रु. १३०/
- धारण करे तो धर्म रु. ७०/-
- क्या बुद्ध दुःखवादी थे? रु. ३५/-
- मंगल जगे गृही जीवन में रु. ४०/-
- धम्मवाणी संग्रह (पालि गाथाएं एवं हिंदी अनु.) रु. ४०/-
- विपश्यना पगोडा स्मारिका रु. १००/-
- सुत्तसार भाग १ (दीघ एवं मज्झिम निकाय) रु. ५५/-
- सुत्तसार भाग २ (संयुत्तनिकाय) रु. ५०/-
- सुत्तसार भाग ३ (अंगुत्तर एवं खुद्दकनिकाय) रु. ४५/-
- धन्य बाबा! रु. ३५/-
- कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का (व्यक्तित्व और कृतित्व) रु. ५०/-
- पातंजल योगसूत्र रु. ५०/-
- आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय - डॉ. ओम प्रकाश जी रु. ३०/-
- राजधर्म [कुछ ऐतिहासिक प्रसंग] रु. ३५/-
- आत्म-कथन भाग-१ रु. ३५/-
- लोक गुरु बुद्ध रु. १०/-
- देश की बाह्य सुरक्षा रु. ०५/-
- गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो! रु. ०६/-
- शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ? रु. १०/-
- अंगुत्तर निकाय, भाग-१ रु. १००/-
- केंद्रीय कारागृह जयपुर, विपश्यना का प्रथम जेल शिविर रु. ३०/-
- विपश्यना : संशोधन भाग-१ रु. ५५/-
- विपश्यना : संशोधन भाग-२ रु. ४५/-
- अग्रगण्य राजवैद्य जीवक रु. २०/-
- मंगल हुआ प्रभात (हिंदी दोहे) रु. ५५/-
- पथ-प्रदर्शिका रु. २/-
- विपश्यना क्यों? रु. १/-
- सम्राट अशोक के अभिलेख रु. ५०/-
- आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन-परिचय रु. २०/-
- अहिंसा किसे कहें? रु. १५/-
- लकुण्टक भद्दिय रु. १०/-
- गौतम बुद्ध: जीवन-परिचय और शिक्षा रु. २५/-
- भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा रु. १०/-
- बुद्ध-जीवन-चित्रावली रु. ३३०/-
- भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक महामोग्गल्लान रु. ३५/-
- क्या बुद्ध नास्तिक थे? रु. ८५/-
- तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, (६ भागों में) भाग-१ रु. ४५/-, भाग-२ रु. ५०/-, भाग-३ रु. ५५/-, भाग-४ रु. ४५/-, भाग-५ रु. ४५/-, भाग-६ रु. ५५/-
- महामानव बुद्ध की महान विद्या विपश्यना का उद्गम और विकास (११६ चित्रों का संग्रह) सजिल्द रु. ६२५/-
- भगवान बुद्ध के महाश्रावक महाकस्सप (धुतांगधारियों में 'अग्र') रु. ३५/-
- महामानव बुद्ध की महान विद्या विपश्यना का उद्गम और विकास रु. १४५/-
- भगवान बुद्ध के अग्रउपासक अनाथपिण्डिक रु. ४०/-
- भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका किसागोतमी रु. २०/-
- चित्त गृहपति एवं हत्थक आळवक रु. ३०/-
- खुशियों की राह रु. १५०/-
- विशाखा मिगारमाता रु. ३५/-
- मगधराज सेनिय बिम्बिसार रु. ४५/-
- बुद्धसहस्सनामावली (पालि एवं हिंदी) रु. ३५/-
- आनन्द - भगवान बुद्ध के उपस्थाक रु. १२०/-
- जीने की कला रु. ७०/-
- परम तपस्वी श्री रामसिंह जी रु. ५५/-
- भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं खुज्जुत्तरा एवं सामावती तथा उत्तरानन्दमाता रु. २५/-
- १२ हिंदी पुस्तिकाओं का सेट रु. १६/-
- धम्म-वंदना (पालि गाथाएं, हिंदी अनुवाद) रु. ४५/-
- धम्मपद (संशोधित हिंदी अनुवाद सहित) रु. ४५/-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

- महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा एवं भाषानुवाद) — रु. ५५/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (भाषानुवाद) — रु. ३५/-
- बुद्धगुणगाथावली (पालि) — रु. ३०/-
- बुद्धसहस्सनामावली (पालि) — रु. १५/-
- प्रारंभिक पालि — रु. ८५/-
- प्रारंभिक पालि की कुंजी — रु. ५०/-
- जागो लोगां जगत रा (राजस्थानी दूहा) — रु. ४५/-
- परिभाषा धरम री (राजस्थानी) — रु. १०/-
- ५ राजस्थानी पुस्तिकाओं का सेट — रु. ५/-
- विश्व विपश्यना स्तूप का संदेश (हिंदी, मराठी, अंग्रेजी) — रु. १०/-

मराठी

रु. ३०/-

- जगण्याची कला — रु. ८०/-
- जागे पावन प्रेरणा — रु. ४०/-
- प्रवचन सारांश — रु. ६०/-
- धर्मः आदर्श जीवनाचा आधार — रु. ४०/-
- जागे अंतर्बोध — रु. ३५/-
- निर्मळ धारा धर्माची — रु. ३०/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (भाषानुवाद) — रु. ६०/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा) — रु. ३५/-
- मंगलमय गृहस्थ-जीवन — रु. १०/-
- भगवान बुद्धाची सांप्रदायिकता-विहीन शिकवणूक — रु. ३३०/-
- बुद्धजीवन-चित्रावली — रु. १५०/-
- आनंदाच्या वाटेवर — रु. ५०/-
- आत्म-कथन भाग-१ — रु. २०/-
- अग्रसाल राजवैद्य जीवक — रु. १२५/-
- महामानव बुद्धाची महान विद्या विपश्यना: उगम आणि विकास — रु. ०६/-
- लोक गुरु बुद्ध — रु. १२/-
- मनुष्यक भोंदू — रु. १८/-
- प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयंका यांचा संक्षिप्त जीवन-परिचय

गुजराती

रु. ४५/-

- प्रवचन सारांश — रु. ४५/-
- धर्मः आदर्श जीवननो आधार — रु. २०/-
- महासतिपट्ठानसुत्त — रु. ७५/-
- जागे अंतर्बोध — रु. ३०/-
- धारण करे तो धर्म — रु. १००/-
- जागे पावन प्रेरणा — रु. ३०/-
- क्या बुद्ध दुःखवादी थे? — रु. ०१/-
- विपश्यना शा माटे? (पुस्तिका) — रु. ३५/-
- मंगल जगे गृही जीवन में — रु. ६५/-
- निर्मल धारा धर्म की — रु. ३३०/-
- बुद्धजीवन-चित्रावली — रु. ०६/-
- लोक गुरु बुद्ध — रु. १०/-
- भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता विहीन शिक्षा

अन्य भाषाओं में

रु. ६०/-

- द आर्ट ऑफ लिविंग (तमिळ) — रु. ३०/-
- डिस्कोर्स समरीज (तमिळ) — रु. २५/-
- ग्रेटिफुल फ्लो ऑफ धम्म (तमिळ) — रु. ३०/-
- मंगल जगे गृही जीवन में (तेलगु) — रु. ३५/-
- प्रवचन सारांश (बंगाली) — रु. २६/-
- धर्मः आदर्श जीवन का आधार (बंगाली) — रु. ९०/-
- महासतिपट्ठानसुत्त (बंगाली) — रु. ४५/-
- प्रवचन सारांश (मलयालम) — रु. ४५/-
- निर्मल धारा धर्म की (मलयालम) — रु. ७५/-
- जीने का हुनर (उर्दू) — रु. ५०/-
- धर्मः आदर्श जीवन का आधार (पंजाबी)

पालि तिपिटक सेटः — रु. १५००/-

अट्ठकथानिकाय (अजिल्द) (१२ ग्रंथ) — रु. ५४००/-

सुत्तनिकाय - सेट १ (९ ग्रंथ) — रु. १०००/-

दीघनिकाय अभिनवटीका (रोमन) (भाग १ और २)

English Publications

Rs. 225/-

- Sayagyi U Ba Khin Journal — Rs. 130/-
- Essence of Tipitaka by U Ko Lay — Rs. 85/-
- The Art of Living by Bill Hart — Rs. 60/-
- The Discourse Summaries

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

- Healing the Healer by Dr. Paul Fleischman Rs. 35/-
- Come People of the World Rs. 40/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching Rs. 45/-
- The Gracious Flow of Dharma Rs. 40/-
- Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta Rs. 80/-
- Vipassana : Its Relevance to the Present World Rs. 110/-
- Dharma: Its True Nature Rs. 70/-
- Vipassana : Addictions & Health (Seminar 1989) Rs. 70/-
- The Importance of Vedanā and Sampajañña Rs. 135/-
- Pagoda Seminar, Oct. 1997 Rs. 80/
- Pagoda Souvenir, Oct. 1997 Rs. 50/-
- A Re-appraisal of Patanjali's Yoga- Sutra by S. N. Tandon Rs. 85/-
- The Manuals Of Dhamma by Ven. Ledi Sayadaw Rs. 205/-
- Was the Buddha a Pessimist? Rs. 65/-
- Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates Rs. 80/-
- Effect of Vipassana Meditation on Quality of Life (Tihar Jail) Rs. 60/-
- For the Benefit of Many Rs. 160/-
- Manual of Vipassana Meditation Rs. 80/-
- Realising Change Rs. 140/-
- The Clock of Vipassana Has Struck Rs. 130/-
- Meditation Now : Inner Peace through Inner Wisdom Rs. 85/-
- S. N. Goenka at the United Nations Rs. 20/-
- Defence Against External Invasion Rs. 10/-
- How to Defend the Republic? Rs. 6/-
- Why Was the Sakyan Republic Destroyed? Rs. 12/-
- Mahāsatipaṭṭhāna Sutta Rs. 65/-
- Pali Primer Rs. 95/-
- Key to Pali Primer Rs. 55/-
- Guidelines for the Practice of Vipassana Rs. 2/-
- Vipassana In Government Rs. 1/-
- The Caravan of Dhamma Rs. 90/-
- Peace Within Oneself Rs. 10/-
- The Global Pagoda Souvenir 29 Oct.2006 (English & Hindi) Rs. 60/-
- The Gem Set In Gold Rs. 75/-
- The Buddha's Non-Sectarian Teaching Rs. 15/-
- Acharya S. N. Goenka An Introduction Rs. 25/-
- Value Inculcation through Self-Observation Rs. 35/-
- Glimpses of the Buddha's Life Rs. 330/-
- Pilgrimage to the Sacred Land of Dhamma (Hard Bound) Rs. 750/-
- An Ancient Path Rs. 100/-
- Vipassana Meditation and the Scientific World View Rs. 15/-
- Path of Joy Rs. 200/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (Small) Rs. 160/-
- Vipassana Meditation and Its Relevance to the World (Coffee Table Book) Rs. 800/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (HB) Rs. 650/-
- Buddhaguṇagāthāvalī (in three scripts) Rs. 30/-
- Buddhasahassanāmāvalī (in seven scripts) Rs. 15/-
- English Pamphlets, Set of 9 Rs. 11/-
- Set of 10 Post Card Rs. 35/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching (French) Rs. 50/-
- Meditation Now: Inner Peace through Inner Wisdom (French) Rs. 80/-
- For the Benefit of Many (French) Rs. 195/-
- For the Benefit of Many (Spanish) Rs. 125/-
- The Art of Living (Spanish) Rs. 130/-
- Path of Joy (German, Italian, Spanish, French) Rs. 300/-

संपर्क: विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जि. नासिक, महाराष्ट्र. फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८. फैक्स: ०२५५३-२४४१७६. (दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवादित विपश्यना साहित्य, स्थानीय केंद्रों पर उपलब्ध है) Email: vri_admin@dhamma.net.in; विपश्यना विशोधन विन्यास के प्रकाशन अब ऑनलाइन भी खरीदे जा सकते हैं। कृपया देखें www.vridhamma.org

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विपश्यना साधना केंद्र

विश्वभर में विपश्यना के निम्नलिखित केंद्र हैं। इन केंद्रों पर प्रायः हर माह दस दिवसीय आवासीय शिविर आयोजित होते हैं। इच्छुक व्यक्ति किसी भी केंद्र से भावी शिविर-कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त करके, अपनी सुविधानुसार सम्मिलित हो सकते हैं: -

प्रमुख केंद्र = धम्मगिरि, धम्मतपोवन : विपश्यना विश्व विद्यापीठ, इगतपुरी-४२२४०३, नासिक. फोन: [९१] (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८; फैक्स: ०२५५३-२४४१७६. Website: www.vri.dhamma.org. Email: <info@giri.dhamma.org> (केवल कार्यालय के समय अर्थात सुबह १० बजे से सायं ५ बजे तक).

धम्मनासिकाः संपर्कः १) नाशिक विपश्यना केंद्र, म.न.पा. जलशुद्धिकरण केंद्र के सामने, शिवाजीनगर, सातपुर, (पोस्ट-YCMOU), नाशिक-४२२२२२. संपर्क: फोन: (०२५३) ६५१६-२४२, ३२०३-६७७, मोबाइल: ९८२२५-१३२४४. Email: info@nasika.dhamma.org

धम्मसरिताः विपश्यना केंद्र, जीवन संध्या मंगल संस्थान, मातोश्री वृद्धाश्रम, सोरगांव, पोस्ट पडघा, ता. भिवंडी, जि. ठाणे-४२११०१ (खडावली मध्य रेल्वे स्टेशन के पास). फोन: (०२५२२) ६९५३०१. संपर्कः +९१ ७७९८३-२४६५९, ७७९८३-२५०८६.

धम्ममनमोदः मनमाड विपश्यना केंद्र, अनकाई किला स्टेशन के पास, पो. अनकाई, ता. येवला, जि. नासिक-४२२ ४०३ संपर्कः (०२५९१) २२५१४१-२३१४१४.

धम्मवाहिनीः मुंबई परिसर विपश्यना केंद्र, गांव रुंदे, टिटवाला (पूर्व) कल्याण. जि. ठाणे. संपर्कः संपर्कः मोबाईल: ९७७३०-६९९७८. केवल कार्यालय के दिन- १२ से सायं ६ तक.

धम्मसाकेतः विपश्यना केंद्र, नालंदा स्कूल के पास, कानसई रोड, सुभाष टेकडी, उल्हासनगर-४२१००४, जि. ठाणे, महाराष्ट्र

धम्मविपुलः विपश्यना साधना केंद्र, सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट, प्लॉट नं. ९१ए; सेक्टर २६, पारसिक हिल, सीबीडी Email: dhammavipula@gmail.com बेलापुर, नवी मुंबई ४०० ६१४. फोन: (०२२) २७५२-२२७७.

धम्मपत्तनः एस्सेल वर्ल्ड के पास, गोराई खाडी, बोरीवली (पश्चिम) मुंबई - ४०० ०९१ व्यवस्थापक, फोन: (९१) (०२२) २८४५-२२३८, ३३७४-७५०१. मोबा. ९७७३०-६९९७५. (सुबह ११ से सायं ५ बजे तक); टेलि-फैक्स: (०२२) ३३७४-७५३१. Email: info@pattana.dhamma.org; Website: www.pattana.dhamma.org

धम्मसरोवरः खान्देश विपश्यना केंद्र, गट नं. १६६, डेडरगांव जलशुद्धिकरण केंद्र के पास, मु.पो. शिरुड-४२४ ००२, जिला- धुळे, (०२५६२) २०३४८२, ६९९५७३. मोबा. ९२२५४-६१०२१. संपर्कः फोन: २२२८६१. मोबा. ९९२२६-०७७१८, ९४०३४-२४३३३, ९४२२७-७७९०२. Email: info@sarovara.dhamma.org

धम्मानन्दः पुणे विपश्यना केंद्र, मरकल गांव के पास, आलंदी से ८ कि.मी. मोबा. कार्यालय ९२७१३-३५६६८. व्यवस्थापक मोबा. ९४२०४-८२८०५. संपर्कः पुणे विपश्यना समिति, नेहरू स्टेडियम के सामने, आनंद मंगल कार्यालय के पास, दादावाडी, पुणे-४११००२. फोन: (०२०) २४४६८९०३, २४४३६२५०; टेलि/फैक्स: २४४६४२४३. Email: info@ananda.dhamma.org Website: www.pune.dhamma.org;

धम्मपुण्णः संपर्कः पुणे विपश्यना समिति, दादावाडी, नेहरू स्टेडियम के सामने, आनंद मंगल कार्यालय के पास, पुणे-४११००२. फोन: (०२०) २४४३६२५०, २४४६८९०३. फैक्स: २४४६४२४३; Email: info@punna.dhamma.org

धम्मालयः दक्षिण विपश्यना अनुसंधान केंद्र, गर्मालेन रोड, आलते पार्क, आलते, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर, पिन: ४१६१२३. फोन: ०२३०-२४८७१६७, २४८७३८३, Email: info@alaya.dhamma.org. संपर्कः कार्यालय: २१०१/१९ इ, अरविंद अपार्टमेंट, लक्ष्मीनगर, कोल्हापुर-४१६००५, फोन.(२३१) २५३०९९९, मोबा. ९७६७७-१३२३२

धम्मअनाकुलः विपश्यना साधना केंद्र, खापरखेड फाटा, नेल्हारा-४४४१०८ जि. अकोला. संपर्कः १) विपश्यना चैरिटेबल ट्रस्ट, शेगांव, अपना बाजार, मेन रोड, शेगांव, जि. बुलडाना. फोन: ९५७१८-६७८९०, ९८८१२-०४१२५. २) श्री महेंद्र सिंह आनंद, मोबाइल: ९४२२१-८१९५०. Email: info@anakula.dhamma.org

धम्मअजयः विपश्यना साधना केंद्र, ग्राम - अजयपुर, पो. चिचपल्ली, मुल रोड, चंद्रपुर. Email: dhammaajaya@gmail.com संपर्कः १) श्री धरडे, सुगत नगर, नगीनाबाग वार्ड नं. २ जि. चंद्रपुर पिन-४४२४०१ मोबाइल: ८००७१५१०५०, ९४२१७-२१००६. २) श्री प्रीतिकमल पाटील, मोबाइल: ९४२१७-२१००६, ९८२२५-७०४३५, ९३७०३१२६७३.

धम्मवलः संपर्कः श्री. शेलके, सिद्धार्थ सोसायटी, यवतमाळ, ४४५००१. फोन: ९४२२८-६५६६१.

धम्मभूसनः विपश्यना साधना समिति, शांतिनगर, ओंकार कॉलोनी, कोटेचा हायस्कूल के पास, जि. जळगांव, भुसावल ४२५२०१. संपर्कः मोबा. ९८२२९-१४०७६. Email: info@bhusana.dhamma.org.

धम्मअजन्ताः अजंता अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना समिति, एम. जी. एम. मेडिकल कॉलेज कैम्पस, एन-६, सिडको, औरंगाबाद-४३१००३. फोन: (०२४०) २३५००१२, २४८०१२४. Email: vipassana@emgm.org संपर्कः १) श्री गायकवाड, फोन: (०२४०) २३४१८३६. २) श्री के. एन. पटेल, फोन: (निवास) (०२४०) २३५४२२३, (कार्या.) २३३३१३६ मोबाईल: ९४२२२-११३४४.

धम्मनागः नागपुर विपश्यना केंद्र- महादुला गांव, नागपुर-कलमेश्वर रोड के पास, नागपुर; संपर्कः फोन: ०७१२-२४५८६८६, २४२०२६१, मोबा. ९४२३६०५६००, फैक्स: २७३९७१६. Email: info@naga.dhamma.org

धम्मसुगतिः संपर्कः १) श्री मानकर, एकायनो मग्गो धम्म प्रशिक्षण संस्था, सुगतनगर, नागपुर-१४. फोन: (०७१२) २६३०११५, फैक्स: २६५०८६७. मोबा. ९४२२१-२१२२९. २) सुरेंद्र राऊत: २६३२९१८, मोबा. ९२२६९-९६०८७.

धम्मवसुधाः विपश्यना केंद्र, जिवत पोस्ट ब्रह्मणी, ता. सेलू, जि. वर्धा संपर्कः १) श्री एन जी वांदे, मोबा. ९३२६७३२५५०, ९३२६७३२५४७. २) श्री काटके, मोबा. ९३७०६९९३२६. Email: dhammavasudha@yahoo.com.in

धम्म ठतपतिः फलटन, सातारा, महाराष्ट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धम्म आवासः लातुर विपश्यना समीती, आर. टी. ओ आफीस के पास, बसंत विहार कालोनी, बाभळगाव रोड, लातूर-४१३५३१ संपर्कः १) श्री द्वारकादास भुतडा, मोबा. ९६७३२५९९००, ०२३८२-२५९२८४, २) श्री आकाश कामदार, मोबा. ९९७०२-७७७०१.

धम्म निरंजनः विपश्यना साधना केंद्र, नेरली कुष्ठधाम नेरली. (नांदेड से ५ कि मी. की दुरी पर) संपर्कः १) श्री एस. एन. ओंधने, मोबाइलः ९४२२१८९३१८. २) डॉ. कुलकर्णी, फोनः (०२४६२) २५२६५९. मोबाइलः ९४२२१७३२०२.

धम्मथलीः विपश्यना केंद्र, पो.बॉ. २०८, जयपुर-३०२००१, राजस्थान, फोनः [९१] ०१४१-२६८०२२०, मोबा. ०-९६१०४-०१४०१, ०९६०२८-४८८९६. फैक्सः २५७६२८३. Email: info@thali.dhamma.org

धम्ममरुधराः विपश्यना साधना केंद्र, सर्दारिया रिसोर्ट के पीछे, पाल-चौपासनी लींक रोड, चोखा, जोधपुर-३४२००९. मोबा. +९१-९३१४७२७२१५, +९१-९८२८१३११२०, फैक्सः +९१-२९१-२७४६४३५. Email: info@marudhara.dhamma.org संपर्कः श्री नेमीचंद भंडारी, ४१, अशोक नगर, पाल लींक रोड, जोधपुर-३४२००३. मोबा.: +९१-९८२९०२७६२१.

धम्मपुब्बजः चूरू (राजस्थान) पुब्बज भुमी विपश्यना ट्रस्ट, बनेरी रोड, (चूरू से ६ कि.मी.) चूरू (राजस्थान): संपर्कः १) श्री श्रवण कुमार फुलवारी, सी-८६, सामुदायीक भवन के पास अग्रसेन नगर, चूरू, मोबा. ०९४१४६-७६०६१. Email: gk.churu@gmail.com २) श्री सुरेश खन्ना, ६५ टंडन कालोनी, धनी पार्क, जयपुर, मोबा. ९४१३१-५७-५६. Email: sureshkhanna56@yahoo.com

धम्मअजयमेरः विपश्यना केंद्र, वीर तेजाजी नगर, दौराई, अजमेर-३०५००३; फोनः (०१४५) २४४३६०४. संपर्कः श्री कैलाश बैरवाल, मोबा. ९४१३२२८३४०, ९४६१५६१३४८, ९००११९६५५६ Email: kailashbairwal@yahoo.com

धम्मपुष्करः विपश्यना केन्द्र, ग्राम रेवत (केड़ल), पुष्कर पर्वतसर रोड, पुष्कर, जि अजमेर. मोबा. +९१-९४१३३-०७५७०. फोनः +९१-१४५-२७८०५७०. संपर्कः १) श्री रवि तोषणीवाल, मोबा. ०९८२९०-७१७७८, Email: info@toshcon.com २) श्री अनिल धारीवाल, मोबा. ०९८२९०-२८२३५. फैक्सः ०१४५-२७८७१३१.

धम्मसोतः विपश्यना साधना संस्थान, गहका गांव, (निम्मोट पोलीस पोस्ट के पास) बल्लभगढ़-सोहना रोड, (सोहना से १२ किमी.), जिला- गुडगांव, सोहना, हरियाणा. मोबा. ९८१२६५५५९९, ९८१२६४१४००. (बल्लभगढ़ और सोहना से बस उपलब्ध है।) संपर्कः विपश्यना साधना संस्थान, रूम न. १०१५, १० वां तल, हेमकुंड/मोदी टावर्स, ९८ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-११००१९. फोनः (०११) २६४८-५०७१, २६४८-५०७२, २६४५-२७७२. फैक्सः २६४७०६५८. Email. info@sota.dhamma.org

धम्मपट्ठान : विपश्यना साधना केंद्र, कम्मासपुर, जि. सोनीपत, हरियाणा, पिन-१३१००१. मोबा. ०९९९१८७४५२८. संपर्कः उपर धम्मसोत के संपर्क पर.

धम्मकारुणिकः विपश्यना साधना संस्थान, गवरमेंट स्कूल के पास, गांव नेवल, डाक सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल-१३२००१; संपर्कः श्री वर्मा, ५, अग्नि कालोनी, एन.डी.आई. के पास, करनाल-१३२००१. टेली-फैक्सः ०१८४-२२५७५४३, २२५७५४४; मोबा. ९९९२०-७७६०१. Email: info@karunika.dhamma.org;

धम्म हितकारीः रोहतक, हरियाणा

धम्मसिखरः हिमाचल विपश्यना केंद्र, धर्मकोट, मेक्लोडगंज, धर्मशाला, जिला- कांगरा, पिन-१७६२१९ (हि. प्र.) फोनः ०१८९२- २२१३०९, २२१३६८. मोबा. (सायं ४ से ५) ०९८५७०-१४०५१. Email: info@sikhara.dhamma.org;

धम्मसलिलः देहरादून विपश्यना केंद्र, जनतनवाला गांव, देहरादून कैन्ट तथा संतला देवी मंदिर के पास, देहरादून-२४८००१. फोनः ०१३५-२१०४५५५, २७१५१८९. संपर्कः १) श्री भंडारी, १६ टैगोर विला, चकराता रोड, देहरादून-२४८००१. फोनः (०१३५) २७१५१८९, फैक्सः २७१५५८०. २) श्री गुप्ता, फोनः २६५३३६६. Email: info@salila.dhamma.org;

धम्मसुवत्थीः जेतवन विपश्यना साधना केंद्रः कटरा बाईपास रोड, बुद्धा इंटर कालेज के सामने, श्रावस्ती, पिन-२७१८४५; फोनः (०५२५२) २६५४३९, ०९३३५८३३३३५ Email: info@suvatthi.dhamma.org संपर्कः श्री मुरली मनोहर, मानव हवेली. मोबाईलः ०९४१५०-३६८९६, ०९४१५७-५१०५२.

धम्मलक्खनः लखनऊ विपश्यना केंद्र, अम्मी गड, बख्शी का तालाब, लखनऊ-२२७२०२. फोनः (०५२२) २९६८५२५. मोबा. ०९७९४५४५३३४. Email: info@lakkhana.dhamma.org संपर्कः १) श्री जैन, ए-१०१, हेम्पटन कोर्टस अपार्टमेंट्स, रिवेरिडी होटल के पीछे, आलमबाग, लखनऊ-२२६ ००५. (उ.प्र.) फोनः नि. (०५२२)-२४२-४४०८. मोबा. ०९३३५९-०६२४१, ०९४१५०-३६८९६, ०९४१५७-५१०५२.

धम्मधजः पंजाब विपश्यना केंद्र, आनंदगढ़, पो. मेहलावली-१४६११०, जिला- होशियारपुर. फोनः ०१८८२-२७२३३३. मोबाइलः ९४६५१-४३४८८. Email. info@dhaja.dhamma.org

धम्म तिहारः नई दिल्ली जेल न. ४ तिहार, केन्द्रीय कारागृह, नई दिल्ली

धम्म रक्खकः नई दिल्ली नजफगढ़, पुलिस ट्रेनिंग कालेज

धम्मचक्कः विपश्यना साधना केंद्र, सुरहीपुर गांव, पो. सियारी, चौबेपुर, (सारनाथ), वाराणसी. फोनः (०५४२) ३२०८१६८. Email: info@cakka.dhamma.org संपर्कः १) श्री गुप्ता, फोनः ०५४२-३२४६०८९. मोबा. ९३३६९-१४८४३, (प्रातः १० से सायं ६.) २) श्री प्रेम शंकर श्रीवास्तव, मोबाइलः ९२३५८-४१९८३.

धम्मकल्याणः कानपुर (उ. प्र.) अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना साधना केंद्र, डोढ़ी घाट, हनुमान मंदिर के पास, गोव एमा, पो. रूमा, कानपुर नगर- २०९४०२. (सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन से २३ कि० मी० एवं रमादेवी चौराहा से १५ कि० मी० दुरी पर स्थित) फोनः ०७३८८-४४३७९३, ०७३८८-४४३७९५, मोबा. ८८९९५४८०१४९. Email: dhamma.kalyana@gmail.com. संपर्कः १) श्री अशोक साहू, मोबा. ०९८३१९-३८०८४, २) डा. ओ. पी गुप्ता, मोबा. ०९४५०१-३२४३६.

धम्मसिन्धुः कच्छ विपश्यना केंद्र, ग्राम- बाडा, मांडवी, जिला- कच्छ-३७०४७५. फोनः (कार्या.) (०२८३४) २७३३०३. फैक्सः २२४१८८, २८८९११; संपर्कः फोनः (०२८३४) २२३०७९, २२३४०६. Email: info@sindhu.dhamma.org

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धम्मकोट : सौराष्ट्र विपश्यना केंद्र, कोटारिया रोड, लोधड़ा गांव, राजकोट, गुजरात. फोन: ०२८१ -२७८२०४०, मोबाईल: ९३२७९-२३५४० (राजकोट से १५ कि.मी.) संपर्क: फोन: ०२८१- २२२०८६१६, मोबाईल: ९४२७२-२१५९१, फैक्स: २२२१३८४ Email: info@kota.dhamma.org

धम्मदिवाकर: उत्तर गुजरात विपश्यना केंद्र, मीठा गाव, ता. और जिला- मेहसाणा, गुजरात; फोन: (०२७६२) २७२८००. Email: info@divakara.dhamma.org संपर्क: फोन: (०२७६२) २५४६३४, २५३३१५ मोबा. ०९४२९२३३०००,

धम्मसुरिन्द: सुरेंद्रनगर, गुजरात संपर्क:१) मलसत्तीजी, फोन: (०२७५२) २४२०३०. २) डॉ. बविशी, फोन: २३२५६४.

धम्मभवन: संपर्क: १) 'धम्मभवन', ५ कालिंदी पार्क, अकोटा अतिथिगृह के पीछे, अकोटा, बड़ोदा-३९००२०; फोन: (०२६५) २३४११८१. २) विठ्ठलभाई पटेल, फोन: (०२६९२) मोबा. ९८२५०-२८०५७. Email: vvsou@hotmail.com

धम्म अम्बिका : विपश्यना ध्यान केंद्र, (१५ कि० मी० नवसारी तथा बिलीमोरा रेल्वे स्टेशन) १) सी एल/१२ निरांजन काम्प्लेक्स, राधा किशन मंदिर के सामने, नूतन सोसायटी के पास, महर्षि अरविंद मार्ग दुधिया तलाव, नवसारी, २) श्री रतनशीभाई के. पटेल, मोबा. ०९८२५०४४५३६, ३) श्री मोहनभाई पटेल, मोबा. ०९५३७२६६९०९

धम्मपीठ: गुर्जर विपश्यना केंद्र, ग्राम- रनोडा, ता. धोलका, जिला- अहमदाबाद- ३८७८१०, मोबा. ८९८००-०१११०, ८९८००-०१११२, ९४२६४-१९३९७. फोन: (०२७१४) २९४६९०. संपर्क: श्रीमती रानी तोदी, मोबा. ९८२४०-६५६६८. Email: info@pitha.dhamma.org

धम्मखेत: विपश्यना अन्तर्राष्ट्रीय साधना केंद्र, (१२.६ किमी.) माइल स्टोन नागार्जुन सागर रोड, कुसुम नगर, वनस्थलीपुरम हैदराबाद-५०००७०, (आंध्र प्रदेश) फोन: (०४०) २४२४०२९०, ३२४६०७६२, ०९४९१५९४२४७, फैक्स: २४२४१७४६. Email: info@khetta.dhamma.org

धम्मसेतु: विपश्यना साधना केंद्र, ५३३, पल्लान- थंडलम रोड, थीरुनीरमलाई रोड, द्वारा, थीरुमुदीवक्कम, चेन्नई-६०००४४. फोन: ०४४-२४७८०९५३, २४७८०९५२, मोबाइल: ९४४४०-२१६२२, संपर्क: फोन: ०४४-४३४०-५०००, ४३४०-५००१, फैक्स: ९१-४४-४२०१-११७७. मोबा. ०९८४०७-५५५५५. Email: setu.dhamma@gmail.com;

धम्मपफुल्ल: बेंगलोर विपश्यना केंद्र, अलूर-५६२१२३. (गांव अलूर, अलूर पंचायत कार्यालय के पास) तुमकूर हाईवे के सामने दासनपुरा बेंगलोर उत्तर तालुका, (कर्नाटक) फोन: (०८०) २३७१-२३७७, २३७१३१०६, ९१-९७३१५९१५८० (सुबह ९ से दोपहर २ तथा सायं ४ से ६ तक), एवं (सुबह १० से सायं ६ तक), ९२४२३-५७४२४ (सुबह ११ से दोपहर ३ तक) Email: info@paphulla.dhamma.org ९३४३५-४५३८८

धम्मनागज्जुन : विपश्यना साधना केंद्र, हिल कॉलोनी, नागार्जुन सागर, जि. नालगोंडा, आंध्र प्रदेश, (हैदराबाद से १४०.४ किमी, बुद्धपार्क के पास, हिल कॉलोनी से हैदराबाद की तरफ २ किमी. दूरी पर) पिन-५०८२०२. फोन: (८६८०) २७७९९१ मोबा: ०९९६३७७५६८५, ९४४०१- ३९३२९. Email: info@nagajjuna.dhamma.org

धम्मनिज्झान : विपश्यना साधना केंद्र, इंदूर, पो. पोचारम-५०३१८६, येदपल्ली मंडल, जि. निजामाबाद, फोन: (०८४६७) ३१६६६२, ९९०८५९६३३६. Email: info@nijjhana.dhamma.org

धम्मविजय : विपश्यना साधना केंद्र, विजयराय, पोस्ट- पेदावेगी मंडलम्, पिन-५३४४७५, जि. पश्चिम गोदावरी, (आंध्र प्रदेश). [विजयराय गांव एलूरू से १५ किमी. एलूरू चिंतलपुडी रोड पर, विजयराय बस स्टैन्ड से ३ की. मी. दूरी पर धम्मविजया सेंटर है, बस स्टैन्ड से ऑटो/टैक्सी उपलब्ध है।] फोन: (०८८१२) २२५५२२; मोबा. ९४४१४-४९०४४

धम्माराम: विपश्यना अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र, कुमुदावल्ली गांव, भीमावरम-भानुरू रोड, (भीमावरम के पास), मंडल -पाल कोंडेरू, जि. पश्चिम गोदावरी, पिन-५३४२१०. फोन: ०८८१६- २३६५६६. Email: info@rama.dhamma.org

धम्म कोण्डञ्ञ : विपश्यना साधना केंद्र, कोंडापुर (व्हाया) संगारेड्डी, जि. मेडक - ५०२३०६. संपर्क: मोबा. ९३९२०-९३७९९, ९३९८३-१६१५५.

धम्मकेतन: विपश्यना साधना केंद्र, पो. मम्परा (व्हाया) कोडुकुलन्जी, चेनान्नूर, जि. अलप्पुझा, केरल-६८९५०८. फोन: (०४७९) २३५-१६१६. Email: info@ketana.dhamma.org संपर्क: १) (कार्यालय) केरल विपश्यना समिती, मायश्री, नेरचयरा लाइन, परनडार रोड, एलमकरा पो. ऑ. कोची-६८२ ०२६. केरल फोन: (०४८४) २५३९८९१ २) श्री वी. रविंद्रन, मोबा. ९८४६५-६९८९१.

धम्म मधुरा: मदुराई (धर्म की मधुरता) मदुराई

धम्मकानन : धम्मकानन विपश्यना केंद्र, वैनगंगा तट, रेंगाटोला, पो. गर्रा, बालाघाट. फोन: (०७६३२) २९२४६५; बालाघाट-४८१००१, (म. प्र.) संपर्क: १) श्री हरीदास मेश्राम, १२६, रतन कुटी, गंगानगर रोड, बूढ़ी, बालाघाट-४८१००१, Email: dineshbgt@hotmail.com २) श्री खोब्रागडे, फोन: (०७६३२) २३९१६५, मोबाईल: ०९४२५१४००१५, मोबा. ०९४२४३-३६२४१.

धम्मकेतु : विपश्यना केंद्र, पोस्ट बॉक्स १६, थनौद, व्हाया-अंजोरा, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़-४९१००१; (म.प्र.) फोन: (०७८८) २२०५५१३, मोबा. ९५८९८४२७३७. Email: info@ketu.dhamma.org संपर्क: १) धम्मकेतु, (उपरोक्त केंद्र के पते पर) तथा मोबा. ०९४२५२-३४७५७, ०९७९८९-२०२४६.

धम्मबल : विपश्यना साधना केंद्र, भेड़ाघाट थाने से एक किलोमीटर, धुआंधार मार्ग, भेड़ाघाट, जबलपुर, मोबा. ९३००५०६२५३. संपर्क: विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर, द्वारा - मधु मेडिकल स्टोर्स, मेडिसिन काम्प्लेक्स, आर्मीब्रिज के पास, मॉडल रोड, बैंक ऑफ बड़ौदा के बाजू में, जबलपुर-०२ फोन: ०७६१-४००६२५२, मोबा. ९९८१५-९८३५२, ९४२४३-५५२१४.

धम्मलिच्छवी : वैशाली विपश्यना केंद्र, लदौरा ग्राम, लदौरा पाकी, मुजफ्फरपुर-८४३११३. फोन: ०९९३११६१२९० संपर्क: श्री गोयन्का, जेनीथ आटो सर्विस, अघोरिया बाजार, पो. गन्नना, मुजफ्फरपुर, पिन ८४२००२, फोन: ०६२१-२२४०-२१५, २२४७७६०. Email: info@licchavi.dhamma.org

धम्मबोधि: बोधगया अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना साधना केंद्र, मगध विश्वविद्यालय के समीप, पो. मगध विश्वविद्यालय, गया-डोभी रोड, बोधगया-८२४२३४, मोबा. ९४७१६-०३५३१, Email: info@bodhi.dhamma.org संपर्क: फोन: (०६३१) २२००४३७, ९९५५९-११५५६.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धम्मपुब्बोत्तरः मिजोरम विपश्यना साधना केंद्र, कमलानगर-२, सीएडीसी, थांगने-सी, जि. लोंगतलाई, मिजोरम -७९६७७२. Email: mvmc.knagar@gmail.com, संपर्कः दिगंबर चकमा, फोनः ०३७२-२५६३६८३. मोबा. ०९४३६७-६३७०८.

धम्मपुरीः त्रिपुरा विपश्यना मेडिटेशन सेंटर, पो. मचमरा, जि. उत्तर त्रिपुरा, पिनः ७९९२६५. मोबा. ०९८६२६-४६७६४, Email: Info@Puri.dhamma.org संपर्कः फोनः ०३८१-२३००४४१, मोबा ०९८६२१-५४८८२, ०९४०२५-२३१९१.

धम्मगंगाः विपश्यना केंद्र, सोदपुर, ईश्वरचन्द्र दत्ता रोड, पानिहाटी, बारो मन्दिर घाट, कोलकाता-७००११४, फोनः (०३३) २५५३२८५५. Email. info@ganga.dhamma.org संपर्कः कार्यालयः श्री कार्जोड़िया, २२, ग्रांनफील्ड लेन, दूसरा तल्ला, कोलकाता-७०००0१, फोन (०३३) २२४२३२२५/४५६१ (२) श्री तोदी, १२३A, मोतीलाल नेहरू रोड, कोलकाता-२९ फोन नि. २४८५४१७९, मोबा. ९८३१४-४७७०१.

धम्मवंगः कोलकाता, पश्चिम बंगाल संपर्कः धम्मगंगा केंद्र.

धम्मपालः धम्मपाल विपश्यना केंद्र, केरवा डैम के पीछे, ग्राम दौलतपुरा, भोपाल-४६२ ०४४, Email: dhammapal@airtelmail.in; संपर्कः मोबा. ९८९३२-८९०४९, फोनः (०७५५) २४६८०५३, २४६२३५१, फैक्सः २४६-८१९७. ऑन लाइन आवेदन: http://www.dhamma.org/en/schedules/schpala.shtml

धम्ममालवा : इंदौर (म.प्र.) विपश्यना केंद्र, ग्राम - जमूडी हप्सी, गोम्मटगिरी के आगे, पितृ पर्वत के सामने, हातोद रोड, इंदौर-४५२००३. संपर्कः १) इंदौर विपश्यना इंटरनेशनल फाउंडेशन, ट्रस्ट, "धम्मगंगा" ५८२, एम. जी. रोड इंदौर (म.प्र.) फोनः (०७३१) ४२७३३१३. Email: info@malava.dhamma.org; मोबा. ९८९३१-२९८८८.

धम्मरत्त : (रतलाम से १५ कि.मी.) साईं मंदिर के पीछे, ग्राम धमनोद ता. साईलन जि. रतलाम-४५७००१, फैक्सः ०७४१२ ४०३८८२, मोबा. ०९८२७५-३५२५७. Email: dhamm.rata@gmail.com संपर्कः रतलाम विपश्यना समिति, द्वारा डा. वाधवानी कॉलोनी, ११७, स्टेशन रोड, रतलाम-४५७००१ मोबा. ०९९८१०-८४८२२, ९४२५३-६४९५६.

धम्मउपवनः बागचांकिया, बिहार संपर्कः फोनः निवास (०६२१) २४४ ९७५; ५५२१ ०७७०

धम्मउक्कलः विपश्यना साधना केंद्र, ग्राम धानबेग पो. अमसेना, (वाया) खरियार रोड जिलाः नुआपाडा, उड़ीसा-७६६१०६, मोबा. ०९४०६२३३८९६, संपर्कः मोबा. ०९४३८६१०००७, ०९४३७०-७०५०५.

धम्मसिक्किमः विपश्यना साधना केंद्र, पो. ऑ. आरो सेन्नी, ग्राम, सेन्नी ईस्ट सिक्किम- ७३७१३५, संपर्कः श्रीलादेवी घोर्गसिया, मोबा. ०९८३०७-०६४८१, ०९७४८४-६१७८७, ०९४३४३-३९३०३, ०९४३४८-६२२२६. Email: basantigorsia@hotmail.com

धम्मशृंगः नेपाल विपश्यना केंद्र, बुढानीलकंठ, पो. बा. १२८९६, काठमांडु, फोनः ९७७ (०१) ४३७१६५५, ४३७१००७, ४२५०५८१, ४२२५४९०; निवासः ४२२४७२०, ४२२६३१४. Email: info@sringa.dhamma.org, संपर्कः फोनः २५०५८१, २२५४९०, नि.२२१२१०, फैक्सः २२४७२०, २२६३१४.

धम्मजननीः लुंबिनी विपश्यना केंद्र, लुंबिनी (पीस फ्लेम के पास), रूपनदेही, लुंबिनी अंचल, नेपाल. Email: info@janani.dhamma.org फोनः ९७७ (७१) ५८०२८२. संपर्कः नेपाल. फोनः ९७७ (७१) ५४१५४९.

धम्मबिराट : पूर्वांचल विपश्यना केंद्र, फुलबारी टोल, बस पार्क के दक्षिण की ओर इटहरी- ७ सुनसरी, नेपाल; फोनः [९७७] (२५) ५८५५२१; Email: info@birata.dhamma.org, संपर्कः १) श्री मूंदड़ा, फोनः [९७७] (२१) ५२५४८८, ५२७६७१. फैक्सः ५२६४६६; २) श्री गोयल, फोनः दुकान [९७७](२५)५२३५२८, नि. ५२६८२९.

धम्मतराई : वीरगंज विपश्यना केंद्र, परवानीपुर, पारसा, नेपाल. Email: info@tarai.dhamma.org संपर्कः १) कार्यालयः सदीप बिल्डिंग, आदर्श नगर, पो. बा. नं. ३२. फोनः ०५१-५२१८८४. फैक्सः ०५१-५८०४६५. मोबा. ९८०४२-८५७६

धम्मचितवन : चितवन विपश्यना केंद्र, मंगलपुर वी.डी.सी. वार्ड नं ८, विजयनगर बाजार के समीप, चितवन, नेपाल Email: info@citavana.dhamma.org संपर्कः १) श्री महाराजन, फोनः ९७७(५६) ५२०२९४, ५२८२९४

धम्मकीर्ति : कीर्तिपुर विपश्यना केंद्र, देवधोका, कीर्तिपुर, नेपाल. संपर्कः श्री महर्जन, समाज सेवा, वार्ड नं. ६, कीर्तिपुर.

धम्मपोखरा : पोखरा विपश्यना केंद्र, पधभेया लेखनाथ नगरपालिका, पोखरा, कास्की, नेपाल. संपर्कः श्री नारा गुरुंग फोनः [९७७] (०६१) ६९२९७२. मोबा. ९८४६२-३२३८३, ९८४१२-५५६८८ Email: info@pokhara.dhamma.org

Cambodia

Dhamma Laṭṭhikā, Battambang Vipassana Centre, Trungmorn Mountain, National Route 10, District Phnom Sampeau, Battambang, Cambodia Contact: Tel. [855] (012) 689 732; poc_nary@hotmail.com; Local Contact: Off: Tel: [855] (536) 488 588, 2. Mr. Sochet Kuoch, Tel: [855] (092) 931 647, [855] (012) 995 269 Email: mientan2000@yahoo.co.uk

Hong Kong

Dhamma Muttā, G.P.O. Box 5185, Hong Kong Tel: 852-2671 7031; Fax: 852-8147 3312 Email: info@hk.dhamma.org

Indonesia

Dhamma Jāvā, Jl. H. Achmad No.99; Kampung Bojong, Gunung Geulis, Kecamatan Sukaraja, Cisarua-Bogor, Indonesia. Tel: [62] (0251) 827-1008; Fax: [62] (021) 581-6663; Website: www.java.dhamma.org Course Registration Office Address: IVMF (Indonesia Vipassana Meditation Foundation), Jl. Tanjung Duren Barat I, No. 27 A, Lt. 4, Jakarta Barat, Indonesia Tel : [62] (021) 7066 3290 (7am to 10pm); Fax: [62] (021) 4585 7618 Email: info@java.dhamma.org

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Iran

Dhamma Iran, Teheran Dhamma House Tehran Mehrshahr, Eram Bolvar, 219 Road, No. 158 Tel: 98-261-34026 97; Email: info@iran.dhamma.org

Israel

Dhamma Pamoda, Kibbutz Deganya-B, Jordan Valley, Israel City Contact: Israel Vipassana Trust, P.O. Box 75, Ramat-Gan 52100, Israel Website: www.il.dhamma.org/os/Vipassana-centre-eng.asp Email: info@il.dhamma.org

Dhamma Korea, Choongbook, Korea. Dabo Temple, 17-1, samsong-ri, cheongcheon-myun, gwaesan-koon, choongbook, Korea. Tel: +82-010-8912-3566, +82-010-3044-8396 Website: www.kr.dhamma.org Email: dhammakor@gmail.com

Japan,

Dhamma Bhānu, Japan Vipassana Meditation Centre, Iwakamiyoku, Hatta, Mizucho-cho, Funai-gun, Kyoto 622 0324 Tel/Fax: [81] (0771) 86 0765, Email: info@bhanu.dhamma.org

Dhammādicca, 782-1 Kaminogo, Mutsuzawa-machi, Chosei-gun, Chiba, Japan 299 4413. Tel: [81] (475) 403 611. Website: www.adicca.dhamma.org

Malaysia

Dhamma Malaya, Malaysia Vipassana Centre, Centre Address: Gambang Plantation, opp. Univ. M.P. Lebuhraya MEC, Gambang, Pahang, Malaysia Office Address: No., 30B, Jalan SM12, Taman Sri Manja, 46000 Petaling Jaya, Malaysia. Tel: [60] (16) 341 4776 (English Enquiry) Tel: [60] (12) 339 0089 (Mandarin Enquiry) Fax: [60] (3) 7785 1218; Website: www.malaya.dhamma.org Email: info@malaya.dhamma.org

Mongolia

Dhamma Mahāna, Vipassana center trust of Mongolia. Eronkhy said Amaryn Gudamj, Soyolyn Tov Orgoo, 9th floor, Suite 909, Mongolia Tel: [976] 9191 5892, 9909 9374; Contact: Central Post Office, P. O. Box 2146 Ulaanbaatar 211213, Mongolia Email: info@mahana.dhamma.org

Myanmar

Dhamma Joti, Vipassana Centre, Wingaba Yele Kyaung, Nga Htat Gyi Pagoda Road, Bahan, Yangon, Myanmar Tel: [95] (1) 549 290, 546660; Office: No. 77, Shwe Bon Tha Street, Yangon, Myanmar. Fax: [95] (1) 248 174 Contact: Mr. Banwari Goenka, Goenka Geha, 77 Shwe Bon Tha Street, Yangon, Myanmar Tel: [95] (1) 241 708, 253 601, 245 327, 245 201; Res. [95] (1) 556 920, 555 078, 554 459; Tel/Fax: Res. [95] (01) 556 920; Off. 248 174; Mobile: 95950-13929; Email: bandoola@mptmail.net.mm;

Dhamma Ratana, Oak Pho Monastery, Myoma Quarter, Mogok, Myanmar Contact: Dr. Myo Aung, Shansu Quarter, Mogok. Mobile: [95] (09) 6970 840, 9031 861;

Dhamma Maṇḍapa, Bhamo Monastery, Bawdigone, Near Mandalay Arts & Science University, 39th Street, Mahar Aung Mye Tsp., Mandalay, Myanmar Tel: [95] (02) 39694 Email: info@mandala.dhamma.org

Dhamma Maṇḍala, Yetagun Taung, Mandalay, Myanmar, Tel: [95] (02) 57655 Contact: Tel: [95] (02) 57655, Email: info@mandala.dhamma.org

Dhamma Makuṭa, Mindadar Quarter, Mogok.Mandalay Division, Myanmar. Tel: [95] (09) 80-31861. Email: info@joti.dhamma.org

Dhamma Manorama, Main road to Maubin University, Maubin, Myanmar. Tel: Contact: U Hla Myint Tin, Headmaster, State High School, Maubin, Myanmar. Tel: [95] (045) 30470

Dhamma Mahimā, Yechan Oo Village, Mandalay-Lashio Road, Pyin Oo Lwin, Mandalay Division, Myanmar. Tel: [95] (085) 21501. Email: info@mandala.dhamma.org

Dhamma Manohara, Aung Tha Ya Qr. Thanbyu-Za Yet, Mon State Contact: Daw Khin Kyu Kyu Khine, No.64 Aungsan Road, Set-Thit Qr. Thanbyu-Zayet, Mon State, Myanmar. Tel: [95] (057) 25607

Dhamma Nidhi, Plot No. N71-72, Off Yangon-Pyay Road, Pyinma Ngu Sakyet Kwin, In Dagaw Village, Bago District, Myanmar. Contact: Moe Mya Mya (Micky), Sanchaung Township, 262-264, Pyay Road, Dagon Centre, Block A, 3rd Floor, Yangon11111, Myanmar. Tel: 95-1-503873, 503516~9. Email: dagon@mptmail.net.mm

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Dhamma Ñāṇadhaja, Shwe Taung Oo Hill, Yin Ma Bin Township, Monywa District, Sagaing Division, Myanmar Contact: Dhamma Joti Vipassana Centre
Dhamma Lābha, Lasho, Myanmar
Dhamma Magga, Near Yangon, Off Yangon Pegu Highway, Myanmar
Dhamma Mahāpabbata, Taunggyi, Shan State, Myanmar
Dhamma Cetiya Paṭṭhāra, Kaytho, Myanmar
Dhamma Myuradipa, Irrawadi Division, Myanmar
Dhamma Pabbata, Muse, Myanmar
Dhamma Hita Sukha Geha, Insein Central Jail, Yangon, Myanmar
Dhamma Hita Sukha Geha-2, Central Jail Tharawaddy, Myanmar
Dhamma Rakkhita, Thayawaddi Prison, Bago, Myanmar
Dhamma Vimutti, Mandalay, Myanmar

Philippines

Dhamma Phala, Philippines Email: info@ph.dhamma.org

Sri Lanka

Dhamma Kūṭa, Vipassana Meditation Centre, Mowbray, Hindagala, Peradeniya, Sri Lanka Tel/Fax: [94] (081) 238 5774; Tel: [94] (060) 280 0057; Website: www.lanka.com/dhamma/dhammakuta Email: dhamma@sltnet.lk

Dhamma Sobhā, Vipassana Meditation Centre Balika Vidyala Road, Pahala Kosgama, Kosgama, Sri Lanka Tel: [94] (36) 225-3955 Email: dhammasobhavmc@gmail.com

Dhamma Anurādha, Ichchankulama Wewa Road, Kalattewa, Kurundankulama, Anuradhapura, Sri Lanka. Tel: [94] (25) 222-6959; Contact: Tel: [94] (25) 222-1887; Mobile. [94] (71) 418-2094. Email: info@anuradha.dhamma.org

Taiwan

Dhammodaya, No. 35, Lane 280, C hung-Ho Street, Section 2, Ta-Nan, Hsin She, Taichung 426, P. O Box No. 21, Taiwan Tel: [886] (4) 581 4265, 582 3932; Website: www.udaya.dhamma.org Email: dhammodaya@gmail.com

Dhamma Vikāsa, Taiwan Vipassana Centre - Dhamma Vikasa No. 1-1, Lane 100, Dingnong Road Laonong Village Liouguei Township Kaohsiung County Taiwan Republic of China Tel: [886] 7-688 1878 Fax: [886] 7-688 1879 Email: info@vikasa.dhamma.org

Thailand,

Dhamma Kamala, Thailand Vipassana Centre, 200 Yoo Pha Suk Road, Ban Nuen Pha Suk, Tambon Dong Khi Lek, Muang District, Prachinburi Province, 25000, Thailand Tel. [66] (037) 403- 514-6, [66] (037) 403 185; Email: info@kamala.dhamma.org

Dhamma Ābhā, 138 Ban Huay Plu, Tambon Kaengsobha, Wangton District, Pitsanulok Province, 65220, Thailand Tel : [66] (81) 605-5576, [66] (86) 928-6077, Fax : [66] (55) 268 049; Website: http://www.abha.dhamma.org/ Email: info@abha.dhamma.org

Dhamma Suvaṇṇa, 112 Moo 1, Tambon Kong, Nongrua District, Khonkaen Province, 40240, Thailand Tel [66] (08) 9186-4499, [66] (08) 6233-4256; Fax [66] (043) 242-288;

Dhamma Kañcana, Moohan Wang Kayai, Tambon Prangpley, Sangklaburi District, Kanchanaburi Province, Thailand Tel. [66] (08) 5046-3111 Fax [66](02) 993-2700 Email: info@kancana.dhamma.org

Dhamma Dhānī, 42/660 KC Garden Home Housing Estate, Nimit Mai Road, East Samwa Sub-district, Klongsamwa District, Bangkok 10510, Thailand Tel. [66] (02) 993-2711 Fax [66] (02) 993-2700 Email: info@dhani.dhamma.org

Dhamma Simanta, Chiengmai, Thailand Contact: Mr. Vitcha Klinpratoom, 67/86, Paholyotin 69, Anusaowaree, Bangkhen, BKK 10220 Thailand Tel: [66] (81) 645 7896; Fax: [66] (2) 279 2968; Email: vitchcha@yahoo.com Email: info@simanta.dhamma.org

Dhamma Porāṇo: A meditator has donated six acres of land near Nakorn Sri Dhammaraj (the name of the city), an important and ancient sea-port.

Dhamma Puneti, Udon Province, Thailand

Dhamma Canda Pabhā, Chantaburi, an eastern ... about 245 kilometres from Bangkok

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Australia & New Zealand,

Dhamma Bhūmi, Vipassana Centre, P. O. Box 103, Blackheath, NSW 2785, Australia Tel. [61] (02) 4787 7436; Fax: [61] (02) 4787 7221 Email: info@bhumi.dhamma.org

Dhamma Rasmi, Vipassana Centre Queensland, P. O. Box 119, Rules Road, Pomona, Qld 4568, Australia Tel: [61] (07) 5485 2452; Fax: [61] (07) 5485 2907 Website: www.rasmi.dhamma.org Email: info@rasmi.dhamma.org

Dhamma Pabhā, Vipassana Centre Tasmania, GPO Box 6, Hobart, Tasmania 7001, Australia Tel: [61] (03) 6263 6785; Website: www.pabha.dhamma.org Course registration & information: [61] (03) 6228-6535 or (03) 6266-4343 Email: info@pabha.dhamma.org

Dhamma Āloka, P. O. Box 11, Woori Yallock, VIC 3139, Australia Tel: [61] (03) 5961 5722; Fax: [61] (03) 5961 5765 Email: info@aloka.dhamma.org

Dhamma Ujjala, Mail to: PO Box 10292, BC Gouger Street, Adelaide SA 5000, [Lot 52, Emu Flat Road, Clare SA 5453, Australia] Tel Contact: Anne Blizzard [61] (0)8 8278 8278; Email: info@ujjala.dhamma.org

Dhamma Padipa, Vipassana Foundation of WA, Australia, Website: www.dhamma.org.au Contact: Andrew Parry C/- 13 Goldsmith Road, Claremont, WA 6010, Australia. Tel: [61]-(8)-9388 9151. Email: info@padipa.dhamma.org

Dhamma Medini, 153 Burnside Road, RD3 Kaukapakapa, Rodney District, New Zealand Tel: [64] (09) 420 5319; Fax: [64] (09) 420 5320; Website: www.medini.dhamma.org Email: info@medini.dhamma.org

Dhamma Passaddhi, Northern Rivers region, New South Wales Email: info@passaddhi.dhamma.org

Europe,

Dhamma Dipa, Harewood End, Herefordshire, HR2 8JS, UK Tel: [44] (01989) 730 234; Email: info@dipa.dhamma.org

Dhamma Padhāna, European Long-Course Centre, Harewood End, Herefordshire, HR2 8JS, UK Email: info@padhana.dhamma.org

Dhamma Dvāra, Vipassana Zentrum, Alte Strasse 6, 08606 Triebel, Germany Tel: [49] (37434) 79770; Website: www.dvara.dhamma.org Email: info@dvara.dhamma.org

Dhamma Mahi, France Vipassana Centre, Le Bois Planté, Louesme, F-89350 Champignelles, France. Tel: [33] (0386) 457 514; Fax [33] (0386) 457 620; Website: www.mahi.dhamma.org Email: info@mahi.dhamma.org

Dhamma Nilaya,, 6, Chemin de la Moinerie, 77120, Saints, France Tel/Fax: [33] 1 6475 1370; Mobile: 0609899079 Email: vcjuly2001@orange.fr

Dhamma Aṭala, Vipassana Centre, SP29, Lutirano 15 50034 Lutirano (Fi) Italy Tel: Off. [39] (055) 804 818; Website: www.atala.dhamma.org Email: info@atala.dhamma.org

Dhamma Sumeru, Centre Vipassana, No. 140, Ch-2610 Mont-Soleil, Switzerland Tel: [41] (32) 941 1670; Website: www.sumeru.dhamma.org Email: info@sumeru.dhamma.org

Dhamma Neru, Centro de Meditación Vipassana, Cami Cam Ram, Els Bruguers, A.C.29, Santa Maria de Palautordera, 08460 Barcelona, Spain Tel: [34] (93) 848 2695; Website: www.neru.dhamma.org Email: info@neru.dhamma.org

Dhamma Pajjota, Dhamma Pajjota, Belgium, Light (or Torch) of Dhamma, Vipassana Centrum, Driepaal 3, 3650 Dilsen-Stokkem, Belgium. Tel: [32] (0) 89 518 230; Website: www.pajjota.dhamma.org Email: info@pajjota.dhamma.org

Dhamma Sobhana, Lyckebygården, S-599 93 Ödeshög, Sweden. Tel: [46] (143) 211 36; Website: www.sobhana.dhamma.org Email: info@sobhana.dhamma.org

Dhamma Pallava, Vipassana Poland Contact: Malgorzata Mye 02-798 Warszawa, Ekologiczna 8 m.79 Poland Tel: [48](22) 408 22 48 Mobile: [48] 505-830-915 Email: info@pl.dhamma.org

Dhamma Sukhakari, East Anglia (UK)

North America

Dhamma Dharā, VMC, 386 Colrain-Shelburne Road, Shelburne MA 01370-9672, USA Tel: [1] (413) 625 2160, Fax: [1] (413) 625 2170; Website: www.dhara.dhamma.org Email: info@dhara.dhamma.org

Dhamma Kuñja, Northwest Vipassana Center, 445 Gore Road, Opalaska, WA

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

98570, USA Tel/Fax: [1] (360) 978 5434, Reg Fax: [1] (360) 242-5988; Website: www.kunja.dhamma.org Email: info@kunja.dhamma.org

Dhamma Mahāvana, California Vipassana Center 58503 Road 225, North Fork, California, 93643 Mailing address: P. O. Box 1167, North Fork, CA 93643, USA Tel: [1] (559) 877 4386; Fax [1] (559) 877 4387; Email: info@mahavana.dhamma.org

Dhamma Siri, Southwest Vipassana Center, 10850 County Road 155 A Kaufman, TX 75142, USA Mailing address: P. O. Box 7659, Dallas, TX 75209, USA Tel: [1] (972) 962-8858; Fax: [1] (972) 346-8020 (registration); [1] (972) 932-7868 (center); Website: www.siri.dhamma.org Email: info@siri.dhamma.org

Dhamma Surabhi, Vipassana Meditation Center, P. O. Box 699, Merritt, BC V1K 1B8, Canada Tel: [1] (250) 378 4506; Email: info@surabhi.dhamma.org

Dhamma Maṇḍa, Northern California Vipassana Center, Mailing address: P. O. Box 265, Cobb, Ca 95426, USA Physical address: 10343 Highway 175, Kelseyville, CA 95451, USA Tel: [1] (707) 928-9981; Email: info@manda.dhamma.org

Dhamma Suttama, Vipassana Meditation Centre 810, Côte Azélie, Notre-Dame-de-Bonsecours, Montebello, (Québec), J0V 1L0, Canada Tél. 1-819-423-1411, Fax. 1- 819- 423- 1312 Email. info@suttama.dhamma.org

Dhamma Pakāsa, Illinois Vipassana Meditation Center, 10076 Fish Hatchery Road, Pecatonica, IL 61063, USA Tel: [1] (815) 489-0420; Fax [1] (360) 283-7068 Website: www.pakasa.dhamma.org Email: info@pakasa.dhamma.org

Dhamma Toraṇa, Ontario Vipassana Centre, 6486 Simcoe County Road 56, Egbert, Ontario, L0L 1N0 Canada Tel: [1] (705) 434 9850; Email: info@torana.dhamma.org

Dhamma Vaddhana, Southern California Vipassana Center, P.O. Box 486, Joshua Tree, CA 92252, USA. Tel: [1] (760) 362-4615;; Email: info@vaddhana.dhamma.org

Dhamma Patāpa, Southeast Vipassana Trust, Jessup, Georgia, South East USA Website: www.patapa.dhamma.org

Dhamma Modana, Canada Tel: [1] (250) 483-7522; Website: www.modana.dhamma.org Email: info@modana.dhamma.org

Dhamma Karuṇā, Alberta Vipassana Foundation Tel: [1](403) 283-1889 Fax: [1](403) 206-7453 Email: registration@ab.ca.dhamma.org

Latin America,

Dhamma Santi, Centro de Meditação Vipassana, Miguel Pereira, Brazil Tel: [55] (24) 2468 1188. Website: www.santi.dhamma.org Email: info@santi.dhamma.org

Dhamma Makaranda, Centro de Meditación Vipassana, Valle de Bravo, Mexico Tel: [52] (726) 1-032017 Registration and information: Vipassana Mexico, P. O. Box 202, 62520 Tepoztlan, Morelos Tel/Fax: [52] (739) 395-2677; Website: www.makaranda.dhamma.org Email: info@makaranda.dhamma.org

Dhamma Pasanna, Melipilla, Chile Email: info@pasanna.dhamma.org

Dhamma Sukhada, Buenos Aires, Argentina, **Contact: Vipassana Argentina,** Tel: [54] (11) 6385-0261; Email: info@ar.dhamma.org

Dhamma Veṇuvana, Centro de Meditación Vipassana, 90 minutes from Caracas. Sector Los Naranjos de Tasajera, Cerca de La Victoria, Estado Aragua, Venezuela. (See map on the website) Tel: [58] (212) 414-5678 For information and registration: Calle La Iglesia con Av. Francisco Solano, Torre Centro Solano Plaza, Of. 7D. Sabana Grande, Caracas, Venezuela. Phone: [58](212) 716-5988, Fax: 762-7235 Website: www.venuvana.dhamma.org Email: info@venuvana.dhamma.org

Dhamma Suriya, Centro de Meditación Vipassana, Cieneguilla, Lima, Perú Email: info@suriya.dhamma.org

South Africa

Dhamma Pāṭāka, (Rustig) Brandwacht, Worcester, 6850. P. O. Box 1771, Worcester 6849, South Africa Tel: [27] (23) 347 5446; **Contact:** Ms. Shanti Mather, Tel/Fax: [27] (028) 423 3449; Website: www.pataka.dhamma.org Email: info@pataka.dhamma.org

Russia

Dhamma Dullabha: Avsyunino Village, Dhamma Dullabha (formerly camp "Druzba") 142 645 Russian Federation. Phones +7-968-894-23-92, +7-901-543-16-27

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का एवं श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का जन्म म्यंमा (वर्मा) के मांडले शहर में १९२४ में हुआ। १०वीं कक्षा में सारे वर्मा में सर्वप्रथम आने पर भी पारिवारिक कारणों से आगे की पढ़ाई न कर सके। उन्होंने कम उम्र में ही अनेक वाणिज्यिक और औद्योगिक संस्थानों की स्थापना की और खूब धन अर्जित किया। अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना की। तनावों के कारण शिरोरोग (Migraine) के शिकार हुए, जिसका उपचार वर्मा के ही नहीं, वल्कि विश्व के प्रसिद्ध डॉक्टर भी न कर सके। तव किसी ने उन्हें 'विपश्यना' की ओर मोड़ा, जो आज उनके तथा अनेकों के कल्याण का कारण वन गयी है।

सयाजी ऊ वा खिन से श्री गोयन्काजी ने १९५५ में विपश्यना विद्या सीखी और चौदह वर्षों तक उनके चरणों में वैठ कर अभ्यास करने के साथ बुद्धवाणी का भी अध्ययन किया। १९६९ में वे भारत आये और मुंवई में पहला शिविर लगा। तत्पश्चात शिविरों का तांता लग गया। १९७६ में इगतपुरी में पहला निवासीय विपश्यना केंद्र वना और अव तक विश्वभर में लगभग १६७ केंद्र वन गये हैं तथा नित नये वनते जा रहे हैं, जहां प्रशिक्षित किये हुए लगभग १२०० विपश्यनाचार्यों के माध्यम से विश्व की ५९ भाषाओं में १०-दिवसीय शिविरों के अतिरिक्त, कई केंद्रों पर २०, ३०, ४५, ६० दिन के शिविर लगते हैं। सव का संचालन निःशुल्क होता है। भोजन, निवासादि का खर्च शिविर से लाभान्वित साधकों के स्वैच्छिक अनुदान से चलता है। इसके सर्वहितकारी स्वरूप को देख कर विश्व की अनेक जेलों और स्कूलों में ही नहीं, पुलिसकर्मियों, जजों, सरकारी अधिकारियों आदि के लिए भी शिविर लगाये जाते हैं।

ISBN 978-81-7414-286-X
VRI - H38

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri